Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 40

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

3 सफर 1440 हिजरी कमरी 3 इख़ा 1397 हिजरी शमसी 3 अक्तूबर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

ख़ुदा के काम कई तरह के हैं। ख़ुदा तआला की क़ुदरत कभी थकती नहीं होती और वह नहीं थकता وَ اَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ (सूरह यासीन 80) هُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمٌ (सूरह:16) उस की शान है। अल्लाह तआला की बे इंतिहा क़ुदरतों और कामों का कैसा ही अक़्ल वाला और इल्म क्यों ना हो अंदाज़ा नहीं कर सकता बल्कि उस को आजज़ी का इज़हार करना पड़ता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

देखो नुत्फ़ा से इन्सान को अल्लाह तआला ने पैदा किया। यह लफ़्ज़ कह देना आसान और बिलकुल आसान हैं और यह एक बिलकुल मामूली सी बात नज़र आती है मगर यह एक भेद और राज़ है कि एक पानी के क़तरा से इन्सान को पैदा करता है और इस में इस किस्म के ताकत रख देता है। क्या किसी अक़्ल की ताक़त है कि वह उस की कैफ़ीयत और भेद तक पहुंचे। तबीबों और फिलासफरों ने बहुत ज़ोर मारा लेकिन वह उस की माहीयत पर सूचना ना पा सके। इसी तरह एक एक कण ख़ुदा तआला के अधीन है। अल्लाह तआला इस पर समर्थ रखता है कि यह ज़ाहरी निज़ाम भी इसी तरह रहे और एक ख़ारिक़ आदत बात भी ज़ाहिर हो जाए। आरिफ़ लोग इन अवस्थाओं को ख़ूब देखते और उनसे आन्नद उठाते हैं। कुछ लोग एक छोटी छोटी और मामूली बातों पर एतराज़ कर देते हैं और शक में पड़ जाते हैं। जैसे इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग ने नहीं जलाया। यह भात भी ऐसी है जैसा शक़्कुल क़मर के बारे में। ख़ुदा ख़ूब जानता है कि इस हद तक आग जलाती है और उन कारणों के पैदा होने से दूर हो जाती है। अगर ऐसा मसालहा ज़ाहिर हो जाए या बतला दिया जाए तो शीघ्र मान लेंगे। लेकिन ऐसी सूरत में ईमान बिलग़ैब और हुस्न ज़न का लुतफ़ और ख़ूबी क्या ज़ाहिर हो। हम ने यह कभी नहीं कहा कि ख़ुदा ख़लक़ अस्बाब नहीं करता मगर कुछ अस्बाब ऐसे होते हैं कि नज़र आते हैं और कुछ अस्बाब नज़र नहीं आते। अत: यह है कि ख़ुदा के काम कई तरह के हैं। ख़ुदा तआला की क़ुदरत कभी थकती नहीं होती और वह नहीं थकता وَ اَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ (सूरह यासीन 80) هُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمٌ (सूरह:16) उस की शान है। अल्लाह तआला की बे इंतिहा क़ुदरतों और कामों का कैसा ही अक़्ल वाला और इल्म क्यों ना हो अंदाज़ा नहीं कर सकता बल्कि उस को आजज़ी का इज़हार करना पड़ता है।

मुझे एक घटना याद है। डाक्टर ख़ूब जानते हैं। अब्दुल करीम नाम का एक आदमी मेरे पास आया। इस के अंदर एक रसौली थी जो पाख़ाना की तरफ़ बढ़ती जाती थी। डाक्टरों ने उसे कहा कि इस का कोई ईलाज नहीं है इस को बंदूक़ मार कर मार देना चाहिए। अत: बहुत सी बीमारिया इस किस्म के हैं जिनके बारे में डाक्टरों को बख़ूबी मालूम नहीं हो सकती। जैसे ताऊन या हैज़ा ऐसी बीमारिया हैं कि डाक्टर को अगर प्लेग डयूटी पर मुक़र्रर किया जाए तो उसे ख़ुद ही दस्त लग जाते हैं। इन्सान जहां तक मुम्किन हो इल्म पढ़े और फ़लसफ़ा की तहक़ीक़ात में लीन हो जाए लेकिन अन्त में उस को मालूम होगा कि उसने कुछ भी नहीं किया। हदीस में आया है कि जैसे समुंद्र के किनारे एक चिड़िया पानी की चोंच भरती हो इसी तरह ख़ुदा तआला के कलाम और काम के मआरिफ़ और भेद से हिस्सा मिलता है। फिर क्या आजिज़ इन्सान! हाँ, नादान फ़लसफ़ी उसी हैसियत और शेख़ी पर ख़ुदा तआला के एक काम शक़्कुल क़मर पर एतराज़ करता और उसे क़ानून क़ुदरत के ख़िलाफ़ ठहराता है। हम यह नहीं कहते कि एतराज़ ना करो। नहीं, करो और ज़रूर करो। शौक़ से और दिल खोल कर करो लेकिन दो बातें समक्ष रख लो। अव्वल ख़ुदा का ख़ौफ़, दूसरे बड़े बड़े फिलासफर भी आख़िर यह इक़रार करने पर मजबूर हुए हैं कि हम जाहिल हैं। अक़्ल की सीमा हमेशा आज्ञानता पर होती है। जैसे डाक्टरों से पूछो कि असबा मजोफ़ा को सब वे जानते और समझते हैं मगर नूर की माहीयत और इस का बेद तो बतलाओ कि क्या है? आवाज़ की माहीयत पूछो तो यह तो कह देंगे कि कान के पर्दा पर यूं होता है और इस तरह होता है लेकिन माहीयत आवाज़ ख़ाक भी ना बतला सकेंगे। आग की गर्मी और पानी की ठंडक पर क्यों का जवाब ना दे सकेंगे। चीज़ों के भेदों तक पहुंचना किसी हकीम या फिलासफर का काम नहीं है। देखिए हमारी शक्ल आईना में प्रतिबिम्बित होती है लेकिन हमारा सिर टूट कर शीशा के अंदर नहीं चला जाता। हम भी सलामत हैं और हमारा चेहरा भी आईना के अंदर नज़र आता है। अत: याद रखो कि अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि ऐसा हो सकता है कि चांद फट जाए और फट कर भी इंतिज़ाम दुनिया में परेशानी ना आए। असल बात यह है कि यह चीज़ों के गुण हैं। कौन दम मार सकता है। इसलिए ख़ुदा तआला के ख़वारिक़ और चमत्कार का इन्कार करना और इन्कार के लिए जल्दी करना जल्दी करने वालों और नादानों का काम है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 2 से 3)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-9)

हुज़ूर बहुत अमन पसंद शख़्स हैं जो सारी दुनिया को अमन ,मुहब्बत और प्यार का पैग़ाम पहुंचा रहे हैं।

मैं ज़ाती तौर पर भी ख़लीफ़ा की बावक़ार और पर दया वाले व्यक्तित्व से बहुत अधिक प्रभावित हूँ कि आपने मानव सेवा, आपसी हमदर्दी और मुहब्बत का पैग़ाम दिया।।

ख़लीफ़ा एक ऐसे इन्सान हैं जो दुनिया में अमन की स्थापना के लिए कोशिश कर रहे हैं और हर कम्यूनिटी को प्यार का पैग़ाम पहुंचा रहे हैं।

आपके हस्पताल बनाने का भी शुक्रिया क्योंकि ऐसा हस्पताल पहले कभी इस देश में नहीं बना, लोग मुसलमानों से डरते हैं लेकिन मेरा ख़्याल है कि मुसलमान दिल के बहुत अच्छे और मेहमान नवाज़ हैं।

ख़लीफ़ा की तक़रीर ऐसी थी जो इन्सान को एहसास दिलाती है कि एक इन्सान को कैसे ज़रूरतमंदों की मदद करनी चाहिए,आप लोगों ने कोई अन्तर नहीं किया यह हस्पताल हर ज़रूरतमंद के लिए बनाया गया है।

हुज़ूर वास्तव में एक सच्चे और रुहानी इन्सान हैं, ख़लीफ़ा को इन्सानियत से प्यार है और यही वजह है कि वह यहां तशरीफ़ लाए हैं और इस्लाम के बहुत से उद्देश्यों में से यह भी एक मक़सद है।

हस्पताल की उद्घाटन का आयोजन भावनाओं से भरी हुई थी, इस प्रोजेक्ट से हज़ारों लोगों को फ़ायदा पहुँचेगा, ख़लीफ़ा का आना एक महान बरकत है और उनकी मौजूदगी में बैठने से सुकून महसूस हुआ।

बिना किसी अज्र के ज़रूरत मंद की मदद करना वास्तविक इस्लाम की रूह है, यह भी सुनकर अच्छा लगा कि ज़रूरतमंद के मांगने से पहले ही उस की मदद करो।

नासिर हस्पताल(ग्वेटामाला) के उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के ख़िताब के बाद मेहमानों के विचार

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

ग्रुप फ़ोटोज़

इस के बाद अमरीका के इन डाक्टर साहिबों ने जो समय समय पर नासिर हस्पताल ग्वेटामाला में ख़िदमतें सरअंजाम दीं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ ग्रुप फ़ोटो बनवाने का सौभाग्य पाया।

*इस के बाद यू ऐस ए, कैनेडा और यूके के ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के डायरैक्टरों और इस विभाग से सम्बन्ध रखने वाले अन्य काम करने वाले ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

*फिर हस्पताल के सारे स्टाफ़ और काम करने वालों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाई।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ हस्पताल के अंदर तशरीफ़ ले आए जहां औरत डाक्टरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार सात बजे यहां से मस्जिद बैतुल अव्वल के लिए रवानगी हुई। साढ़े सात बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद तशरीफ लाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए मिशन के रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। इस के बाद हुज़ूर अनवर दफ़्तर में तशरीफ़ ले आए और सेंट्रल अमरीका और साऊथ अमरीका के देशों से आने वाले मुबल्लग़ीन ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ ग्रुप फ़ोटो बनवाने का सौभाग्य पाया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने हर मुबल्लिग़ से अकेले अकेले फ़रमाया कि वे किस देश में सेवा कर रहे हैं और स्पेनिश ज़बान किस-किस ने सीख ली है और इस वक़्त देश में कितने अहमदी हैं और जमाअत की संख्या क्या है।

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने जायज़ा के बाद सारी मुबल्लग़ीन को हिदायत फ़रमाई कि जहां पर मुतय्यन हैं और मुक़ीम हैं सिर्फ वहीं तब्लीग़ी कोशिशें ना हों बल्कि वहां से दूर जा कर दूसरे इलाक़ों में भी लोगों तक पैग़ाम पहुंचाना चाहिए। खासतौर पर जहां लोगों की आबादी ज़्यादा हो और इस्लाम में दिलचस्पी भी हो।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने हर मुबल्लिग़ को साल में कम से कम एक सौ बैअतें करवाने का लक्ष्य दिया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ आठ बजकर पंद्रह मिनट पर मस्जिद में तशरीफ़ ले आए और नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला यहां से होटल Porta के लिए तशरीफ़ ले गए। पुलिस ने क़ाफ़िला को Escort किया। लगभग नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

23 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक मंगलवार)

नासिर हस्पताल, ग्वेटामाला के उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर अनवर के ख़िताब के बाद मेहमानों के विचार

नासिर हस्पताल, ग्वेटामाला के उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के ख़िताब ने मेहमानों पर बहुत गहरा असर छोड़ा है और बहुत से मेहमानों ने अपने विचार का प्रकट किए हैं।

*एलियाना कालिस(Iliana Calles) मैंबर आफ़ पार्लीमैंट ग्वेटामाला अपने विचार बयान करते हुए कहती हैं: यह मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान है कि मुस्लिम जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा का एयरपोर्ट पर स्वागत करने का सौभाग्य नसीब हुआ। इस के अतिरिक्त ग्वेटामाला के लिए यह बात भी इज़्ज़त के योग्य और सम्मान का कारण है कि ख़लीफ़ा अपनी बेगम साहिबा के साथ इस देश को बरकत देने और नासिर हस्पताल का उद्घाटन करने के लिए तशरीफ़ लाए। आपने दौरान गुफ़्तगु मुझे बताया कि जहाज़ से मैंने ग्वेटामाला का नज़ारा किया तो ग्वेटामाला की ज़मीन को बहुत ही हरा भरा और ख़ूबसूरत पाया।

ख़लीफ़ा के पूछने पर मैंने बताया कि हमारी पार्लीमैंट 158 मेम्बरों पर आधारित है जो क़ानून बनाती है और सैनेट नहीं है और मेरा सम्बन्ध हुकूमती पार्टी से है और मैं अपने पारलीमनटीरीन ग्रुप की इंचार्ज हूँ। इस के अतिरिक्त पार्लीमैंट की तरफ़ से पाँच कमीशन मेरे सपुर्द हैं जिनकी मैं निगरान हूँ। इकनॉमिक्स,डफ़िनस, कल्चर, ख़ुराक और औरतों के बारे में कमीशन। इन सब का सम्बन्ध के बारे में मिनिस्ट्री और इंस्टीटियूट से है।

ख़लीफ़ा ने सिर्फ हस्पताल के अवसर पर जो पैग़ाम दिया वो एक अलग और अमन बख़श मुहब्बत का पैग़ाम है। नासिर हस्पताल का उद्घाटन ज़रूरतमंदों के लिए एक सोच से बढ़ कर नेअमत है। इस मुबारक आयोजन में मेरे अंदाज़ा के अनुसार 700 लोगों मौजूद थे जिनका सम्बन्ध दुनिया के विभिन्न देशों से था जो इंतिहाई ध्यान और ग़ैर से से ख़लीफ़ा का ख़िताब सुन रहे थे। ह्यूमेनिटी फ़र्स्ट इस

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अस्हाबुस्सुहफा ..आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऐसे दीवाने हैं कि आप का दर नहीं चाहते ''ख़ुदा की क़सम एक या दो महीने से अल्लाह के रसूल के घर में धुआँ नहीं उठा'

''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम अपनी ज़ात अक़्दस को हम में शुमार करने के लिए हमारे बीच बैठ गए। आप ने मुबारक हाथ से हलक़ा बना कर इशारा किया आर्थात मैं भी तुम में से ही हूँ और बीच में बैठ गए''

इख़लास तथा वफ़ा के साक्षात मूर्ति बदरी अस्हाब नबी हज़रत उत्बह बिन मसूद हुज़ल्ली रज़ि और हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि अल्लाह अन्हुमा की सीरत मुबारका का दिल-नशीं वर्णन

हज़रत उत्बह बिन मसूद रज़ि की सीरत के परिप्रेक्ष्य में अस्हाब सुफ़्फ़ा की क़ुर्बानियों और उनके मुक़ाम का वर्णन, हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि के हवाले से इस्लामी फ़ुतूहात का संक्षिप्त वर्णन

ख़िलाफ़त की ग़ैरत रखने वाले, धर्म को प्राथमिकता देने वाले, अल्लाह पर भरोसा रखने वाले, विनम्र मिज़ाज, शायर, अदीब, उच्च प्रबन्धक, एक निडर अहमदी आदरणीय ताहिर आरिफ़ साहिब की वफ़ात पर उनका ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जुम्अः के बाद नमाज़ जनाज़ा हाज़िर

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 अगस्त 2019 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक,इस्लामाबाद। (सरे), यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बदरी सहाबा के ज़िक्र में आज मैं जिन सहाबी का पहले ज़िक्र करूँगा उनका नाम है हज़रत उत्बह बिन मसऊद हुज़ल्ली रज़ि। हज़रत उत्बह बिन मसऊद हुज़ल्ली रज़ि की कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह थी। आप क़बीला बनू हुज़ैल से थे।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तिस्सहाबः भाग 3 पृष्ठ 563 ''उत्बह बिन मसऊद' दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2008 ई)

हज़रत उत्बह बिन मसूद रज़ि क़बीला बनू ज़हु के हलीफ़ थे। आप के पिता का नाम मसऊद बिन ग़ाफ़िल था और आप की माता का नाम उम्मे अब्द बिन्त अब्दे वुद्द था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि आप के हक़ीक़ी भाई थे। आप मक्का में आरम्भिक इस्लाम लाने वालों में से थे। हब्शा की तरफ़ दूसरी बार हिज्रत करने वालों में आप शामिल थे

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 4 पृष्ठ 381 उत्बह बिन मसऊद' विमिन हुलफ़ाए बनी ज़हर बिन किलाब। दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

हज़रत उत्बह बिन मसूद रज़ि अस्हाब सुफ़्फ़ा में से थे

(अलमुस्तदरक अलस्सहीहैन लिल्हाकिम भाग 5 पृष्ठ 1615 किताबुल हिजर, हदीस नंबर 4294 प्रकाशन नज़ार मुस्तुफ़ा अल्बाज़ मक्का मुकर्रमः अलर्याज़ 2000 ई)

सुफ़्फा के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने विभिन्न तारीख़ों से विस्तार लेकर लिखा है। लिखते हैं कि मस्जिद के एक किनारे में एक छत्तेदार चबूतरा बनाया गया था जिसे सुफ़्फ़ा कहते थे। ये उन ग़रीब मुहाजिरीन के लिए था जो बेघर थे। उनका कोई घर नहीं था। ये लोग यहीं रहते थे और 'अस्हाबुस्सहफा कहलाते थे। उनका काम मानो दिन रात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम की सोहबत में रहना, इबादत करना और क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत करना था। इन लोगों का कोई मुस्तक़िल आय का माध्यम ना था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ख़ुद उनका ध्यान फ़रमाते थे और जब कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम के पास कोई तोहफा इत्यादि आता था या घर में कुछ होता था तो उन का हिस्सा ज़रूर निकालते थे। बल्कि कई बार आप ख़ुद फूखे रहते थे और जो कुछ घर में होता था वह अस्हाबुस्सुहफा को भिजवा देते थे। अन्सार भी उनकी मेहमानी में अपनी ताकत के अनुसार व्यस्त रहते थे और उन के लिए ख़जूरों के ख़ोशे ला लाकर मस्जिद में लटका दिया करते थे लेकिन इस के बावजूद उनकी हालत तंग रहती थी और कई बार भूक तक नौबत पहुंच जाती थी और यह हालत कई साल तक जारी रही यहां तक कि कुछ तो मदीना की आबादी के बढ़ने के नतीजे में इन लोगों के लिए काम निकल आया और कुछ ना कुछ मज़दूरी मिल जाती थी और कुछ क़ौमी बैतुल माल से उनकी सहायता की अवस्था पैदा हो गई।

(उद्धरित सीरत ख़ात्मुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 270)

बहरहाल उन लोगों के बारे में दूसरी जगह और अधिक विस्तार कुछ इस तरह है कि ये लोग दिन को नबुव्वत की दरगाह में हाज़िर रहते और हदीसें सुनते। रात को एक चबूतरे पर पड़े रहते। अरबी ज़बान में चबूतरे को सुफ़्फ़ा कहते हैं और इसी बिना पर इन बुज़ुर्गों को अस्हाबुस्सुफ्हा सुफ्फ़ा कहा जाता है। उनमें से किसी के पास चादर और तह बंद दोनों चीज़ें कभी एक साथ जमा ना हो सकीं। चादर को गले से इस तरह बांध लेते थे कि रानों तक लटक आती थी, कपड़े पूरे नहीं होते थे। हज़रत अबूहुरैरा रज़ि अल्लाह तआला अन्हो इन्ही बुज़ुर्गों में से थे। उनका वर्णन है कि मैंने सुफ्फ़ा वालों में से 70 आदमियों को देखा कि उनके कपड़े उनकी रानों तक भी नहीं पहुंचते थे, जिस्म पर कपड़ा लपेटते थे तो वह घुटनों से ऊपर मुश्किल से पहुंचता था। फिर कहते हैं कि आय का तरीक़ा यह था कि उनमें एक टोली दिन को जंगल से लकड़ियाँ चुन कर लाती और बेच कर अपने भाईयों के लिए कुछ खाना मुहय्या करती। प्राय अन्सार खजूर की शाख़ें तोड़ कर लाते और मस्जिद की छत में लटका देते। बाहर के लोग आते और उनको देखते तो समझते कि ये दीवाने हैं। बेवक़ूफ़ लोग हैं। बिना कारण यहां बैठे हुए हैं। या यह भी समझते होंगे कि ये आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम के ऐसे दीवाने हैं कि आप का दर छोड़ना नहीं चाहते। बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम के पास कहीं से सदक़ा आता तो आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम उनके पास भेज देते और जब दावत का खाना आता तो उनको बुला लेते और उनके साथ बैठ कर खाते। अक्सर ऐसा होता कि रातों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम उनको मुहाजरीन अन्सार पर तक़सीम कर देते अर्थात अपनी शक्ति के अनुसार हर शख़्स एक एक दो दो अपने साथ ले जाए और रात को उनको खाना खिलाए। कई बार ऐसे मौक़े भी होते थे कि किसी को कई मुहाजिरीन के सपुर्द कर दिया। किसी को अन्सार के सपुर्द कर दिया कि रात का खाना उनको देना है। हज़रत साद बिन अबादह रज़ि एक सहाबी थे जो निहायत फ़य्याज़ और दौलतमंद थे वह कभी कभी अस्सी अस्सी मेहमानों को अपने साथ ले जाया करते थे। अस्सी मेहमानों को साथ ले जाते। रात को उनको खाना खिलाते थे। उनकी कुशाइश थी। विभिन्न रिवायतों के अनुसार या कई रिवायतों के अनुसार अहले सुफ्फ़ा की संख्या विभिन्न वक़्तों में विभिन्न रही थी। कम से कम 12 लोग और यह भी कहा जाता है कि ज़्यादा से ज़्यादा यहां तक कि 300 अफ़राद एक वक़्त मुक़ाम सुफ्फ़ा में मुक़ीम

रहे थे बल्कि एक रिवायत में उनकी कुल संख्या 600 सहाबा किराम बताई है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम को उनके साथ निहायत मुहब्बत थी। उनके साथ मस्जिद में बैठते। उनके साथ खाना खाते और लोगों को उनका सम्मान करने पर तैय्यार करते। अर्थात यह नहीं कि ये बैठे हुए हैं, फ़ारिग़ हैं तो उनकी इज़्ज़त ना की जाए, उनका सम्मान ना किया जाए बल्कि आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि ये लोग हैं जो मेरे लिए, मेरी बातें सुनने के लिए बैठते हैं इसलिए हर एक को उनकी सही तरह इज़्ज़त भी करनी चाहिए, सम्मान भी करना चाहिए। एक-बार अहले सुफ़्फ़ा की एक जमाअत ने आं हज़रतत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम में शिकायत की कि ख़जूरों ने हमारे पेट को जला दिया है। सिर्फ खजूरें ही खाने को मिलती हैं और तो कुछ मिलता नहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने उनकी शिकायत सुनी तो उनका दिल रखने के लिए एक तक़रीर की जिसमें फ़रमाया यह क्या है कि तुम लोग कहते हो कि हमारे पेटों को ख़जूरों ने जला दिया है। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि खजूर ही मदीना वालों की ख़ुराक है लेकिन लोग इसी के द्वारा हमारी मदद भी करते हैं और हम भी उन्ही के द्वारा तुम्हारी मदद करते हैं। फिर आप ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम एक या दो महीने से अल्लाह के रसूल के घर में धुआँ नहीं उठा। अर्थात मैंने भी और मेरे घर वालों ने भी सिर्फ पानी और खजूर पर गुज़र किया है। बहरहाल ये अस्हाब सुफ़्फ़ा अजीब फ़िदाई लोग थे। खजूर के खाने का ज़िक्र तो क्या, शिकवा तो किया कि उसने पेट को जला दिया है लेकिन जगह नहीं छोड़ी। वे कामिल वफ़ा के साथ वहीं बैठे रहते थे और इसी चीज़, फ़ाक़ों पर या फिर ख़जूरों पर या जो भी मिल जाता था इस पर गुज़ारा करते थे। फिर लिखा है कि इन बुज़ुर्गों का काम ये था कि रातों को प्राय इबादत करते थे और क़ुरआन मजीद पढ़ते रहते। उनके लिए एक मुअल्लिम निर्धारित था जिसके पास रात को जा कर ये पढ़ते थे। जिनको पढ़ना नहीं आता था या कुरान करीम सही तरह पढ़ नहीं सकते थे या याद करना चाहते होंगे तो मुअल्लिम उनको रात को पढ़ाता था। इस आदार पर उनमें से अक्सर क़ारी कहलाते थे और इस्लाम के प्रचार के लिए कहीं भेजना होता तो यही लोग भेजे जाते थे। जब ये पढ़ लिख गए तो फिर ये क़ारी भी कहलाने लग गए और फिर दूसरों को तालीम देने के लिए भी उनको भेजा जाता था। बाद में इन्ही अस्हाब में से बहुत से बड़े बड़े ओहदों पर भी फ़ाइज़ हुए अर्थात अस्हाब सुफ़्फ़ा जो थे ये नहीं कि बाद में वहीं बैठे रहे बल्कि ओहदों पर, बड़े बड़े ओहदों पर निर्धारित हुए। अत: हज़रत अबूहुरैरह रज़ि हज़रत उमर रज़ि के खिलाफत के समय में मैं बहरीन के गवर्नर रहे थे। फिर हज़रत मुआविया रज़ि के दौर में मदायन के गवर्नर रहे। हज़रत साद बिन अबी वकास रज़ि बसरा के गवर्नर रहे और कूफ़ा शहर की बुनियाद आपने डाली। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि मदाइन के गवर्नर रहे। हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि कूफ़ा के गवर्नर रहे। ये सब असहाब सुफ़्फ़ा में शामिल थे। हज़रत उबादा बिन जराह रज़ि फ़िलस्तीन के गवर्नर रहे। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि हज़रत उम्र बिन अब्दुल अज़ीज़ के दौर में मदीना के गवर्नर रहे। इन्ही में से एक सिपहसालार भी थे जिन्हों ने फ़ुतूहात इस्लामीया में एक नुमायां किरदार अदा किया। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि ना सिर्फ सिपहसालार थे बल्कि हज़रत उमर रज़ि के दौर में क़ाज़ी उलकज़ा के ओहदे पर भी रहे।

(उद्धरित सैरुस्सहाबा भाग 5 पृष्ठ 548 से 550 दारुल इशाअत कराची 2004 ई)(उद्धरित जुसतजूए मदीना लेखक अब्दुल हमीद कादरी पृष्ठ 672 से 681)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि से रिवायत है कि मैं ग़रीब मुहाजिरीन की जमाअत में जा बैठा अर्थात इन्ही अस्हाब सुफ़्फ़ा की जमाअत में जो आधे नंगा होने के कारण एक दूसरे से शर्मा रहे थे या तक़रीबन आधा जिस्म उनका नंगा था और इस हद तक था कि मुश्किल से अपने शर्म योग्य स्थान को छिपा रहे थे। फिर कहते हैं कि हम में से एक क़ारी क़ुरआन की तिलावत कर रहा था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम खड़े हो गए तो क़ारी ख़ामोश हो गए। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने सलाम किया और पूछा कि तुम क्या कर रहे हो? हमने अर्ज़ किया कि यह क़ारी हमें तिलावत सुना रहा था और हम किताबुल्लाह को सुन रहे थे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग भी शामिल फ़रमाए जिनके साथ सब्र करने का हुक्म मुझे भी दिया गया है कि जिस तरह ये सब्र कर रहे हैं तुम्हें भी सब्र का हुक्म है। रावी वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम अपनी ज़ात अक़्दस को हम में शुमार करने के लिए हमारे बीच में बैठ गए। आप ने मुबारक हाथ से से हलक़ा बना कर इशारा किया आर्थात मैं भी तुम में से ही हूँ। एक दायरा बनाया और बीच में बैठ गए, अत: सब का रुख आप की तरफ़ हो गया। रावी का वर्णन है कि मेरे ख़्याल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने उनमें मेरे सिवा किसी को नहीं पहचाना। वर्णन करने वाले ने कहा कि इतने ज़्यादा लोग थे कि मेरे सिवा किसी को नहीं पहचाना। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हे तंग हाथ मुहाजिरीन के गिरोह तुम्हें बशारत हो। क़ियामत के दिन तुम कामिल नूर के साथ अमीर लोगों से आधा दिन पहले जन्नत में दाख़िल होगे और यह आदा दिन जो है वह पाँच सौ वर्ष का है।

(सुनन अबू दाऊद किताबुल इलम बाब फ़ी अलकिसस हदीस नम्बर 3666)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम को भी इलहाम हुआ था जिस में अस्हाबे सुफ़्फ़ा का ज़िक्र है। अरबी इलहाम था कि

اَصْحَابُ الصُّفَّةِ وَمَا اَدْرَاكَ مَا اَصْحَابُ الصُّفَّةِ تَرٰى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ۔ يُصَلُّوْنَ عَلَيْكَ۔ رَبَّنَا اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ وَدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا۔

सुफ़्फ़ा के रहने वाले और तू क्या जानता है कि क्या हैं सुफ़्फ़ा के रहने वाले। तू देखेगा कि उनकी आँखों से आँसू जारी होंगे। वे तेरे पर दुरूद भेजेंगे और कहेंगे कि हे हमारे ख़ुदा हमने एक मुनादी करने वाले की आवाज़ सुनी है जो ईमान की तरफ़ बुलाता है।'

(हकीकतुल वह्य रुहानी ख़ज़ाइन भाग 22 पृष्ठ 78)

यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने कई साथियों के बारे में हुआ था कि मुझे भी ऐसे ही मिलेंगे। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाया है कि ये जो अस्हाब सुफ़्फ़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम के ज़माने में जो गुज़रे हैं, बड़ी शान वाले लोग थे और बड़े मज़बूत ईमान वाले लोग थे और उन्होंने जो इख़लास तथा वफ़ा का नमूना दिखाया है वह एक मिसाल है और अल्लाह तआला ने मुझे भी फ़रमाया है कि तुम्हें भी मैं कई ऐसे लोग प्रदान करूँगा।

सहीह बुख़ारी में हज़रत उत्बह बिन मसूद रज़ि का ज़िक्र इन सहाबा किराम की सूचि में किया गया है जो जंग बदर में शामिल हुए थे फिर भी सहाबा के हालात पर आधारित जो कई और किताबे हैं असदुल लग़ाबह फ़ी मारफ़तिस्सहाब:, अलासाबा फ़ी तमीईज़स्सहाब: और अलइस्तेयाब फ़ी मारफ़तिल असहाब और अलबकातुल कबरा इत्यादि में उनके जंग उहद के और इस के बाद वाली जंगों में शामिल होने का ज़िक्र मिलता है

(सहीह बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब तसिमत नि सुम्मा अहल बदर...)

(असदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तिस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 563 उत्बह बिन मसऊद' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2008 ई)

(अलासाबा फ़ी तमीईज़िस्सहाब: भाग 4 पृष्ठ 366 उत्बहब बिन मसऊद अल-हुज़ली, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1995 ई)

(अल्अइस्तेयाब फ़ी मारफ़ितल अस्हाब भाग 3 पृष्ठ 1030 उत्बह बिन मसऊद अलहुज़ली, दारुल कुतुब बेरूत)

(अत्तबकातुल अलकुबरा भाग 4 पृष्ठ 381 वमिन हुलफ़ाइ बनी ज़हर ,''उत्बह बिन मसऊद''दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

लेकिन जंग बदर में नहीं। लेकिन बुख़ारी ने हज़रत उत्बह बिन मसूद रज़ि का ज़िक्र बदरी सहाबा में किया है

हज़रत उत्बह बिन मसूद रज़ि की हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि के दौर ख़िलाफ़त में 23 हिज्री में मदीना में वफ़ात हुई और हज़रत उमर रज़ि ने उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। क़ासिम बिन अब्दुर्रहमान से रिवायत है कि हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि ने हज़रत उत्बह बिन मसूद रज़ि की नमाज़ जनाज़ा में उनकी माता हज़रत उम्मे अब्द रज़ि का इंतिज़ार किया कि वह भी शामिल हो जाएं।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद भाग 4 पृष्ठ 238 उत्बह बिन मसऊद' वमिन हुलफ़ाइ बनी ज़हर। दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत लबनान 1996 ई) (अलबदाया वन्नहाया भाग 4 अंश 7 पृष्ठ 138 सुम्मा दख़लत सिनत सलासीन वा इशरा,दारुल कुतुब अल्इलिमया 2001ई)

इमाम ज़ोहरी से उद्धिरत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि सोहबत और हिज्रत के लिहाज़ से अपने भाई हज़रत उत्बह से ज़्यादा पुराने ना थे। अर्थात हज़रत उत्बह बिन मसूद रज़ि ज़्यादा पुराने सहाबी थे। अब्दुल्लाह बिन उत्बह से रिवायत है कि जब हज़रत उत्बह बिन मसूद रज़ि की वफात हुई तो आप के भाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि की आँखों में आँसू आ गए। कई लोगों ने आप से कहा

कि क्या आप रोते हैं? तो उन्होंने जवाब दिया कि यह मेरे भाई थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम के हाँ मेरे साथी थे और हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि के इलावा सब लोगों से ज़्यादा मुझको प्यारे थे।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तिस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 563 उत्बह बिन मसऊद' दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2008 ई)

एक और रिवायत में है कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि के पास उनके भाई हज़रत उत्बह बिन मसूद रज़ि की वफ़ात की ख़बर पहुंची तो उनकी आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने कहा कि إِنَّ هٰذِهٖ رَحْمَةٌ جَعَلَهَا اللّٰهُ لَا يَمْلِكُهَا ابْنُ اٰدَمَ कि यक़ीनन यह रहमत है जिसे अल्लाह ने पैदा किया है और इब्न आदम उस को क़ाबू करने पर सामर्थ नहीं।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 4 पृष्ठ 381-382 उत्बह बिन मसऊद वमिन हुलफ़ा बनी ज़हर। दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

अर्थात यह मौत सच है और नेक लोगों के लिए तो फिर रहमत बन जाती है। एक रिवायत के अनुसार हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि हज़रत उत्बह बिन मसूद रज़ि को अमीर मुक़ामी भी बनाया करते थे

(अलअसाबा फ़ी तमीईज़ अलसहाबा भाग 4 पृष्ठ 366 ''उत्बह बिन मसऊद अलहुज़ली''दारुल फ़िक्र बेरूत 2001 ई)

अगले जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि है। यह अन्सारी थे। हज़रत उबादह रज़ि के पिता का नाम सामित बिन क़ैस और माता का नाम कुर्रतुल बिंत उबादा था। बैअत अक़्बा औला और सानिया में यह शरीक थे। अन्सार के क़बीला ख़ज़रज के ख़ानदान बनू औफ़ बिन ख़ज़रज के सरदार थे जो 'क़ौवाक़िल् के नाम से मशहूर थे। कौकल नाम की जो वजह है वो यह है कि जब मदीना में किसी सरदार के पास कोई शख़्स पनाह का तलबगार होता तो इस से यह कहा जाता था कि इस पहाड़ पर जैसे मर्ज़ी चढ़। अब तू अमन में है अर्थात तुझे कोई मुश्किल नहीं। जहां जिस तरह मर्ज़ी रह अर्थात तू इस हालत में लौट जा कि तो फ़राख़ी महसूस कर और अब किसी भी चीज़ का ख़ौफ़ ना खा। और वे लोग जो पनाह देने वाले थे वे 'कवाकिला के नाम से मशहूर थे। इब्न हश्शाम कहते हैं कि ऐसे सरदार जब किसी को पनाह देते तो उसे एक तीर देकर कहते कि इस तीर को लेकर अब जहां मर्ज़ी जाओ। हज़रत नुअमान रज़ि के दादा सअलब बिन दअद को कोकल कहा जाता था। इसी तरह ख़ज़रज के सरदार ग़नम बिन औफ़ को भी कोकल कहा जाता था। इसी तरह हज़रत उबादा बिन सामित भी कोकल के लक़ब से मशहूर थे। बनू सालिम, बनू ग़नम और बनू औफ़ बिन ख़ज़रज को भी को कवाकिल कहा जाता था। बनू औफ़ के सरदार हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि थे।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तिस्सहाब: ले इब्न असीर भाग 3 पृष्ठ 158-159 अबादह बिन अलसामित, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2008ई)(अत्तबका-तुल कुबरा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 414 अन्नमान बिन मालिक , दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2012 ई)(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्न हिशाम पृष्ठ 309 अलअकबतुल ऊला व मसअब बिन उमैर, दारुल कुतुब अल्इलिमया 2001ई) (ताजुल उरूस ज़ेर माद्दा ''ककल' भाग15 पृष्ठ 627 बाब अललाम प्रकाशन दारुल फ़िक्र बेरूत1994 ई)

हज़रत अबादह रज़ि के एक बेटे का नाम वलीद था जिसकी माता का नाम जमीला बिंत अबू सअसअ था। दूसरे बेटे का नाम मुहम्मद था जिसकी माता का नाम हज़रत उम्मे हराम बिन्त मिलजान था। हज़रत औस बिन सामित रज़ि हज़रत उबादा के भाई थे। हज़रत औस रज़ि भी बदरी सहाबी थे

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 280-281 उबादा बिन सामित, दार अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत 1996 ई)

जब हज़रत अबू मर्सद ग़नवी रज़ि हिज्रत कर के मदीना आए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबादा के साथ उनका भाईचारा स्थापित फ़रमाया। हज़रत उबादा जंग बदर, अहद, ख़ंदक़ और सीरा जंगों में रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम के साथ शरीक थे। हज़रत उबादह रज़ि 34 हिज्री में रमलह: फ़लस्तीन में फ़ौत हुए। कई के अनुसार बैतुल-मक़द्दस में फ़ौत हुए और वहीं तदफ़ीन हुई और उनकी क़ब्र आज भी प्रसिद्ध है। एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अबादह रज़ि की वफ़ात क़ुबरुस में हुई जबकि वह हज़रत उमर रज़ि की तरफ़ से इस पर वाली बना कर भेजे गए थे। वफ़ात के वक़्त उनकी उम्र 72 साल थी। उनका क़द लंबा जिस्म मोटा और बहुत ख़ूबसूरत था। कुछ के अनुसार उनकी वफ़ात पैंतालीस हिज्री में अमीर मुआविया के समय में हुई मगर पहला कथन ज़्यादा सही है जिसमें उनकी वफ़ात जो है वह 34 हिज्री में फ़लस्तीन में हुई ना कि 45 हिज्री

(असदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तिस्सहाब: भाग 3पृष्ठ 55-56 दारुल फ़िक्र बेरूत 2003 ई)

(अलइस्तिआब फ़ी मारफ़तिल असहाब भाग 2 पृष्ठ 355 उबादा बिन सामित, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2002 ई)

(शरह मस्नद अश्शाफी लेखक अब्दुल करीम बिन मुहम्मद क़ज़ूनी भाग 2 पृष्ठ 165 प्रकाशन इदारा अश्शऊन अल्इसलामिया कतर 2007 मकत्बा अश्शामली)

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि की रिवायतों की संख्या 181 तक पहुँचती है। हदीसों की विभिन्न रिवायतें उनसे हैं जिसके रिवायत करने वाले अकाबिर सहाबा और ताबईन हैं। अत: सहाबा किराम में से हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि, हज़रत मिकदाम बिन मअदी करिबि इत्यादि हैं।

(सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 405 दारुल इशाअत उर्दू कराची 2004 ई)

रावी कहते हैं कि हज़रत उबादह रज़ि जंग बदर में शामिल हुए थे और अक़बा की रात यह भी सरदारों में से एक सरदार थे कि हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि ने वर्णन किया है। यह कहते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम के इर्द-गिर्द आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम के सहाबा का एक गिरोह था फ़रमाया कि मुझ से इस बात पर बैअत करो कि तुम किसी चीज़ को भी अल्लाह का शरीक नहीं ठहराओगे। ना ही चोरी करोगे और ना ही औलाद को क़तल करोगे और तुम जान बूझ कर बोहतान नहीं बाँधोगे और ना मारूफ़ बात में तुम नाफ़रमानी करोगे। अत: जिसने भी तुम में से यह अह्द पूरा किया उस का हदला अल्लाह तआला के ज़िम्मा होगा और जिसने इन बुराइयों में से कोई बुराई की और फिर दुनिया में उसे सज़ा मिल गई तो यह सज़ा उस के लिए कफ़्फ़ारा होगी और जिसने इन बुराइयों में से कोई बुराई की और फिर अल्लाह तआला ने इस की पर्दापोशी फ़रमाई तो इस का मामला अल्लाह के सपुर्द है। अल्लाह चाहे तो इस से दरगुज़र करे और चाहे तो उसे सज़ा दे। अत: हमने इन बातों पर आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम से बैअत की थी। यह बुख़ारी की रिवायत है

(सही अल-बुख़ारी किताबुल ईमान बाब अलामतुल ईमान हुब्बुल अनसार हदीस 18)

हजरत मदीना के वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने जब क़बा में नमाज़ जुम्अ: अदा फ़रमाई तो नमाज़ जुम्अ: पढ़ने के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम मदीना की तरफ़ जाने के लिए अपनी ऊंटनी पर सवार हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने इस की लगाम ढीली छोड़ दी और इस को कोई हरकत ना दी। ऊंटनी दाएं और बाएं इस तरह देखने लगी कि जैसे वह चलने के लिए किसी दिशा और किसी रुख का फ़ैसला कर रही है कि मैं किधर जाऊं। यह खड़ी थी, दाएं बाएं देख रही थी और आगे नहीं चल रही थी। यह देखकर बनू सालिम के लोगों ने अर्थात जिनके मुहल्ले में आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने जुम्अ: की नमाज़ पढ़ी थी उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम से सवाल किया। उन में इतबान मालिक और नौफ़ल बिन अब्दुल्लाह बिन मालिक और उबादा बिन सामित भी थे। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम। हमारे यहाँ क़ियाम फ़रमाईए। यहां इस इलाक़े में लोगों की संख्या भी ज़्यादा है और इज़्ज़त तथा हिफ़ाज़त भी पूरी होगी। हम पूरी तरह इज़्ज़त भी करेंगे, आप की हिफ़ाज़त भी करेंगे और यहां हैं भी हम ज़्यादा मुस्लमान। एक रिवायत में यह लफ़्ज़ भी है कि यहां दौलत और सम्मान भी है। हमारे लोग बड़े कुशाइश वाले हैं। पैसे हमारे पास हैं। एक रिवायत में यूं है कि हमारे क़बीले में उतरिए, हम संख्या में भी ज़्यादा हैं और हमारे पास हथियार भी हैं। इसी तरह हमारे पास बाग़ और ज़िंदगी की ज़रूरतें भी हैं। अर्थात कि हिफ़ाज़त भी हम कर सकते हैं। आर्थिक लिहाज़ से भी हम बेहतर हैं। फिर उन्होंने कहा कि हे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम) जब कोई ख़ौफ़ और दहशत का मारा हुआ अरब इस इलाक़े में आ जाता है तो वह हमारे यहाँ ही आकर पनाह ढूंढता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने उनकी सारी बातें सुन लीं। उनके लिए ख़ैर के कलिमात प्रदान फ़रमाए और फ़रमाया तुम्हारी बातें, तुम्हारा सब कुछ ठीक है। और फ़रमाया कि ऊंटनी का रास्ता छोड़ दो क्योंकि आज यह मामूर है। उसने जहां भी जाना है, रुकना है, बैठना है अल्लाह तआला के हुक्म से ही जाएगी। एक दूसरी रिवायत में यह अलफ़ाज़ हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने

फ़रमाया यह ऊंटनी मामूर है इसलिए उस का रस्ता छोड़ दो। आप मुस्कुराते हुए यह फ़र्मा रहे थे कि जो भी तुम ने पेशकश की है अल्लाह तुम पर अपनी बरकत नाज़िल फ़रमाए। फिर ऊंटनी वहां से चल पड़ी।

(अस्सीरतुल हलिबया भाग 2 पृष्ठ 83 बाब अलहिजरत इलल मदीनत, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2002 ई)

फ़तह मिस्र के अनुसार ''सैरुस्सहाब: ''का जो लेखक है लिखता है कि ख़िलाफ़त फ़ारूक़ी में मिस्र के फ़तह होने में देर हुई तो हज़रत उमरो बिन आस रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि को मज़ीद मदद के लिए ख़त लिखा। हज़रत उमर रज़ि ने चार हज़ार फ़ौज रवाना की जिसमें से एक हज़ार फ़ौज के अफ़्सर हज़रत उबादह रज़ि थे और जवाब में लिखा कि इन अफ़िसरों में से हर शख़्स एक हज़ार आदमियों के बराबर है। यह मदद मिस्र पहुंची तो हज़रत उमरो बिन आस रज़ि ने सारी फ़ौज को एक स्थान पर जमा कर के एक प्रभावित करने वाली तक़रीर की और हज़रत उबादहओ को बुला कर कहा कि अपना नेज़ा मुझ को दीजिए और ख़ुद उन्होंने, अमरो बिन आस रज़ि ने, अपने सिर से अपना इमामा उतारा और नेज़े पर लगा कर उनके हवाले किया कि यह सिपहसालार का अल्म है, सिपहसालार का झंडा है और आज आप सिपहसालार हैं। ख़ुदा की शान कि इस के बाद पहले ही हमले में शहर फ़तह हो गया।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: लेखक सईद अन्सारी भाग 3 हिस्सा 2 पृष्ठ 402 दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि फ़तह दमिशक़ के बाद हिमस आए और यहां के बाशिंदों ने उनसे सुलह कर ली उस के बाद उन्होंने हज़रत उबादा बिन सामित अनसारी रज़ि को हिम पर निगरान मुक़र्रर किया और ख़ुद हुमा की तरफ बढ़े। हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि ने बाद में लाज़िक़्किया की तरफ़ कूच किया जो शाम देश में समुद्र के साहिल पर स्थित एक शहर है। इस के बाशिंदों ने मुस्लमानों से जंग की। वहां एक बहुत बड़ा दरवाज़ा था जो लोगों की एक बड़ी जमाअत के बिना नहीं खुलता था। हज़रत उबादह रज़ि लश्कर को शहर से दूर ले गए और उसे ऐसे गढ़े खोदने का हुक्म दिया जिसमें एक आदमी और इस का घोड़ा अच्छी तरह छुप जाएं। लंबी ख़ंदक़ खोदीं। मुस्लमानों ने गढ़े खोदने में बड़ी कोशिश की और जब इस काम से फ़ारिग़ हो चुके तो दिन की रोशनी में हुमा की तरफ वापस जाना ज़ाहिर किया और जब रात छा गई तो ये लोग अपनी छावनी और अपनी ख़ंदक़ों की तरफ़ वापस आ गए जो खोदी थीं। लज़िक़्किया धोके में यह समझते रहे कि वे उनको छोड़कर चले गए हैं। जब दिन चढ़ा तो उन्होंने अपना दरवाज़ा खोला और अपने मवेशी लेकर निकले। मुस्लमान अचानक प्रकट हुए जिन्हें देखकर वे लोग दहल गए। मुस्लमानों ने उन पर चढ़ाई कर दी और दरवाज़े से शहर में दाख़िल हो गए और इस को फ़तह कर लिया। हज़रत उबादह रज़ि क़िले में दाख़िल हुए। इस की दीवार पर चढ़े और इसी पर से तकबीर कही। लअज़क़्किकयह के इसाइयों में से एक क़ौम यसिद की तरफ़ भाग गई। फिर उन लोगों ने इस पर अमान चाही कि उन्हें उनकी ज़मीन की तरफ़ वापस आने दिया जाए। पहले तो डर के चले गए लेकिन फिर उन्होंने कहा कि हमें अमान दें और हम वापस आना चाहते हैं। अत: ख़िराज की अदायगी पर ज़मीन उनके हवाले कर दी गई कि एक हिस्सा आय का तुम दोगे और उनको उनकी ज़मीन वापस कर दी और उनकी इबादत का स्थान उनके लिए छोड़ दी गई। जहां वह इबादत करते थे वह भी उनको वापस कर दी गई कि ठीक है तुम जिस तरह चाहते हो अपनी इबादत करो। मुस्लमानों ने लज़क़्किया में हज़रत उबादह रज़ि के हुक्म से एक मस्जिद बनाई जो बाद में बड़ी की गई। हज़रत उबादह रज़ि और मुस्लमान समुंद्र के किनारे पहुंचे और बलदह नाम का एक शहर फ़तह किया जो जब्ला क़िला से दो फ़र्सख़ अर्थात छ: मील की दूरी पर था।

हज़रत उबादह रज़ि और उनके साथी मुस्लमानों ने फिर काफ़ी विजय की हैं। उनके द्वारा अनतरतूस फ़तह हुआ जो सीरिया देश में समुंद्र के किनारे स्थित एक शहर है। इसी तरह फिरसीरिया के इलाक़े लज़क़्किया, जब्लह,बलदह अन्तरतूस हज़रत उबादह बिन सामित रज़ि के हाथों फ़तह हुए।

(फ़ुतूहुल बुलदान पृष्ठ 83 से 85 अमर हुम्मस दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2000 ई)

(मुअज्जमुल बुलदान भाग 4 पृष्ठ 169 अल्लाज़िक्कया' भाग 1 पृष्ठ 320''अन्त-रतूस' प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत)

एक बार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबादह रज़ि को कई सदक़ों का आमिल बनाया और उन्हें नसीहत फ़रमाई कि अल्लाह तआला से डरते रहना। कहीं ऐसा ना हो कि क़ियामत के दिन तुम ऊंट को अपने ऊपर लादे हुए हो और वह बिलबिलाता हो या गाय को लादे हुए आओ और इस की आवाज़ निकल रही हो या बकरी को लादे हुए आओ और वह मिमियाती हो अर्थात कहीं ख़यानत ना हो जाए। ऐसा ना हो कि सदक़ों की सही तरह हिफ़ाज़त ना कर सको और इस ज़माने में जो सदक़े आते थे। ज़कात में या सदक़ों में ऊंट गाय बकरियां इत्यादि जो चीज़ें आ रही हैं यह ना हो कि उनकी तक़सीम का और उनकी हिफ़ाज़त का तुम सही तरह हक़ ना अदा कर सको और फिर क़ियामत के दिन वही चीज़ें तुम्हारे पर बोझ बन जाएँगी। हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि ने यह सुन कर कहा कि उस ज़ात की क़सम जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम को हक़ के साथ भेजा है मैं तो दो आदमियों पर भी आमिल ना बनूँगा।

मेरी तो यह हालत है कि मैं तो किसी का कोई बोझ बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसलिए मुझे तो ना ही बनाएँ तो ठीक है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम के ज़माने में अन्सार में से पाँच आदमीयों ने क़ुरआन को जमा किया था जिनके नाम हैं।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि, हज़रत उबादह बिन सामित रज़ि, हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि , हज़रत अबू अय्यूब अनुसारी रज़ि और हज़रत अबू दर्दाअ रज़ि

(असदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तिस्सहाब: भाग 3पृष्ठ 55 दारुल फ़िक्र बेरूत 2003 ई)

हज़रत यज़ीद बिन सफ़यान रज़ि ने फ़तह शाम के बाद हज़रत उमर रज़ि को लिखा कि सीरिया सवालों को ऐसे मुअल्लिम की ज़रूरत है जो उन्हें क़ुरआन सिखाए और धर्म की समझ बूझ दे तो हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत मुआज़ रज़ि, हज़रत उबादह रज़ि और हज़रत अबू दर्दाय रज़ि को भेजा। हज़रत उबादह रज़ि ने जा कर फ़लस्तीन में निवास किया। जुनादह से रिवायत है कि मैं जब हज़रत उबादह रज़ि के पास हाज़िर हुआ तो मैंने उन्हें इस हालत में पाया कि उन्हें अल्लाह के धर्म की ख़ूब समझ थी। अर्थात बड़े इल्म वाले थे।

(अलासाबा फ़ी तमीईज़ अलसहाबा भाग 3 पृष्ठ 507 अबादह बिन सामित, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2005 ई)

जब मुस्लमानों ने मुल्क शाम को फ़तह किया तो हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत उबादह रज़ि और उनके साथ हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि और हज़रत अबूदर्दाय रज़ि को शाम भिजवाया ताकि वहां लोगों को क़ुरआन करीम की तालीम दें और उनको धर्म सिखाएँ। हज़रत उबादह रज़ि ने हिमस में क़ियाम किया और हज़रत अबू दर्दाय रज़ि ने दमिशक़ में क़ियाम किया और हज़रत मुआज़ रज़ि फ़लस्तीन की तरफ़ चले गए फिर कुछ देर बाद हज़रत उबादह रज़ि भी फ़लस्तीन चले गए। वहां अमीर मुआवीया ने एक मामला में अर्थात धर्म के मामले में मुख़ालिफ़त की जिसको हज़रत उबादह रज़ि नापसंद करते थे। किसी धर्मिक मसले में मतभेद था। अमीर मुआविया ने उनसे इस पर सख़्त कलामी की तो हज़रत उबादह रज़ि ने कहा कि मैं हरगिज़ आपके साथ एक सरज़मीन में ना रहूँगा। फिर वह मदीना चले गए तो हज़रत उमर

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

रज़ि ने पूछा कि तुम्हें क्या चीज़ उधर ले आई है। हज़रत उबादह रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि को सारी बात बताई कि इस तरह इख्तिलाफ हुआ था और फिर उन्होंने मेरे साथ बड़ी सख़्त कलामी की है। बहरहाल इख्तिलाफ की वजह से वह वापस आ गए। इस पर हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया कि तुम अपनी जगह वापस चले जाओ और अल्लाह ऐसी ज़मीन को ख़राब कर देगा जिस में तुम या तुम्हारे जैसा कोई और ना हुआ। अर्थात ज्ञान वाला लोग, धर्म का इलम रखने वाले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम के पुराने सहाबा में से लोग ज़रूर होने चाहियें। नहीं तो यह इस ज़मीन की बदक़िस्मती है। इसलिए तुम्हारा वापस जाना ज़रूरी है और अमीर मुआवीया को भी यह फ़रमान लिख कर भेजा कि तुम्हें इन अर्थात हज़रत उबादह रज़ि पर कोई इख्तियार नहीं है।

(असदुल ग़ाबह फ़ी अलसहाबा भाग 3 पृष्ठ 55 अबादह बिन अस्सामित, दारुल फ़िक्र बेरूत 2003 ई)कई मसले हैं अगर ये वर्णन करते हैं या कई बातें कहते हैं तो उनके लिए सुना करो और ये जो कहते हैं वह ठीक कहते हैं। बहरहाल हज़रत उबादह रज़ि की काफ़ी और मज़ीद बातें भी हैं। उनके हवाले से उनकी और रिवायतें हैं जो इंशा अल्लाह तआला अगले ख़ुत्बा में वर्णन होंगी क्योंकि वह ज़्यादा लंबी तफसीलें हैं। उस पर वक़्त से अधिक लगेगा।

अब मैं एक मरहूम का ज़िक्र करना चाहता हूँ जिनका जनाज़ा भी मैं अभी पढ़ाऊंगा। जनाज़ा हाज़िर है। वह हैं आदरणीय ताहिर आरिफ़ साहिब जो 26 अगस्त को बड़ी सब्र वाली बीमारी के बाद यू.के में अल्लाह तआला के आदेश से वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। कैंसर की तकलीफ़ थी उनको और बड़े सब्र से उन्होंने इस तकलीफ़ को बर्दाश्त किया। पहले यह सरकारी अफ़्सर थे और बड़ी ऊंची रैंक के अफ़्सर थे। वहां से रिटायर्ड हुए। इस के बाद मैंने कुछ अरसा पहले, कुछ साल पहले उनको सदर फ़ज़ले उम्र फ़ाउंडेशन बनाया था। तो इस लिहाज़ से आजकल यह सदर फ़ज़ल उम्र फ़ाउंडेशन थे और धर्म की ख़िदमत कर रहे थे।

मुकर्रम ताहिर आरिफ़ साहिब13 फरवरी 1952 ई को पैदा हुए और बुनियादी तौर पर तो उनका ख़ानदान स्यालकोट से था लेकिन बहरहाल फिर यह सरगोधा आकर आबाद हो गए थे। मुकर्रम ताहिर आरिफ़ साहिब के पिता मुकर्रम चौधरी मुहम्मद यार आरिफ़ साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला थे जिनको बतौर मुबल्लिग़ इंग्लिस्तान में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। नायब इमाम मस्जिद लंदन भी रहे। उनके पिता मुहम्मद यार आरिफ़ साहिब रब्वह में नायब वकीलुल तबशीर तहरीक जदीद भी रहे। इस तरह मौलाना मुकर्रम मुहम्मद यार आरिफ़ साहिब जो थे वह जमाअत के चोटी के मुनाज़िर और बहुत बड़ आलिमों में शुमार होते थे।23 मार्च1940 ई को जिस जलसे में पाकिस्तान की क़रारदाद मंज़ूर हुई थी इस में हज़रत मौलाना अबदुर्रहीम नय्यर के साथ बतौर नुमाइंदा जमाअत अहमदिया मुकर्रम मुहम्मद यार आरिफ़ साहिब भी शामिल हुए थे अर्थात ताहिर आरिफ़ साहिब के पिता और यह भी उनको बहरहाल एक तारीख़ी सआदत हासिल हुई थी। ताहिर आरिफ़ साहिब की माता आदरणीया इनायत सुरय्या बेगम थीं। और उनके दादा हज़रत चौधरी ग़ुलाम हुसैन भट्टी साहिब रज़ि सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। ताहिर आरिफ़ साहिब बड़े इलमी और ज़ौक़ रखने वाले आदमी थे और बड़े अनुभवी अदीब भी थे और शायर भी थे। कई किताबें भी उन्होंने लिखी हैं। उनके दो शेअरी मजमुए मशहूर हैं। एक उर्दू का और एक पंजाबी का। इस के इलावा दो और किताबें भी उनकी काफ़ी अच्छी हैं। एक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम पर अंग्रेज़ी में किताब लिखी उन्होंने ''मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम' और एक और किताब है पाकिस्तान के बारे में ''पाकिस्तान मंज़िल ब मंज़िल यह उनकी दूसरी किताब है। उन्होंने पंजाब यूनीवर्सिटी से एम-ए इकनॉमिक्स करने के बाद वहीं एल. एल.बी की डिग्री भी ली। फिर उच्च शिक्षा के लिए इं-ग्लिस्तान आ गए। लंडन स्कूल आफ़ इकनॉमिक्स से एल एल एम (LLM)की डिग्री हासिल की और अल्लाह के फ़ज़ल से लंडन यूनीवर्सिटी से मार्क आफ़ मेरिट का एज़ाज़ भी उनको हासिल हुआ। लंदन से शिक्षा के बाद पाकिस्तान आ गए और यहां सी एस एस (CSS)का इमतिहान पास किया। सिवल सर्विसिज़ पाकिस्तान से जुड़ गए और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से तरक़्क़ी करते करते इन्सपैक्टर जनरल आफ़ पुलिस (जी) के ओहदे तक पहुंचे और हमारे ख़िलाफ़ क़ानून के बाद पाकिस्तान के जो हालात थे उन हालात में इस पोज़ीशन में पहुंचना यक़ीनन आपकी ग़ैरमामूली सलाहीयतों पर दलीत करता है

पाकिस्तान पुलिस के इलावा एफ़ आई ए और इमीग्रेशन इन्टैलीजैंस ब्यूरो में भी मुतय्यन रहे हैं। जब आप तालीम के सिलसिले में इंग्लिस्तान में मुक़ीम थे तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह तआला के इरशाद पर चौधरी रशीद साहिब ने बच्चों की अंग्रेज़ी में जो किताबें लिखी थीं उन किताबों के लिखने में भी उनको सहयोग की तौफ़ीक़ मिली और उन्होंने इस में काफ़ी सहातया की।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्स-लाम की किताबों के अध्ययन का बड़ा शौक़ था और कोई ना कोई किताब हमेशा उनके अध्ययन में रहती थी। फिर यह कि सिर्फ अध्ययन नहीं बाक़ायदा किताबों के नोटिस लेते थे और फिर अपने दोस्तों से उनके मज़ामीन पर विचार विमर्श भी भी किया करते थे। बड़े बाक़ायदा क़ुरआन करीम की तिलावत करने वाले, इस पर ग़ौर करने वाले थे और उनके अज़ीज़ों में से तो किसी ने नहीं लिखा लेकिन मुझे पता है कि एक बार बातों बातों में ज़िक्र हुआ तो तब मुझे पता चला कि बड़ी बाक़ायदगी से यह तहज्जुद के वक़्त उठने वाले और तहज्जुद अदा करने वाले थे। नौकरी के दौरान पाकिस्तान में जहां भी मुक़ीम रहे हमेशा जमाअती ख़िदमात के लिए हाज़िर रहे। और बड़े निडर इन्सान थे। ख़ुदा के फ़ज़ल से जैसा कि मैंने कहा बड़ा वसीअ मुतआला था और ज़हन भी बड़ा अच्छा था इसलिए धार्मिक मुतआला भी, दुनियावी मुतआला भी ,इलम भी बड़ा था इस लिहाज़ से यह अपने इस इलम को इस्तिमाल भी करते थे और जमाअती तौर पर भी कई मामलों में बड़ी अच्छी राय रखते थे और बड़े मज़बूत राय वाले वजूद थे। ख़िलाफ़त अहमदिया के लिए बड़ी ग़ैरत रखने वाले थे। बड़े मुख़लिस और निडर अहमदी थे। सारी ज़िन्दगी इस कोशिश में रहे कि ख़िलाफ़त अहमदिया के सुल्तान नसीर बने रहें और वफ़ादार ख़ादिम सिलसिला के तौर पर ज़िन्दगी गुज़ारें और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मैंने देखा है कि इस कोशिश में अल्लाह तआला ने उनको कामयाब भी फ़रमाया। मेरे क्लास फ़ैलो थे और बचपन से, कॉलेज के ज़माने से मैं उनको जानता था। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस वक़्त से उनको इलम हासिल करने का बड़ा शौक़ था। अच्छे डीबीटर (debater)भी हुआ करते थे। कॉलेज की डीबीटों में हिस्सा लिया करते थे। मुक़र्रर अच्छे थे और इस वक़्त भी उनका धार्मिक इल्म मैंने देखा है काफ़ी था। यह बात भी काबिल ज़िक्र है कि जमाअत के ख़ुद्दाम और वाक़फ़ीन ज़िंदगी के लिए ख़ास सम्मान और प्यार के जज़बात रखते थे और इस के इलावा अहमदी दोस्तों की उचित मदद के लिए हर समय तैयार रहते थे। बड़े अच्छे ओहदे पर फ़ाइज़ थे। इस लिहाज़ से उन्होंने अपने अहमदियों की जो जायज़ मदद थी उस को यथा सम्भव करने की कोशिश की

फ़ज़ले उम्र फ़ाउंडेशन में उनकी ख़िदमात का सिलसिला 2014 ई से शुरू होता है। इस वक़्त मैंने उनको डायरेक्टर फ़ज़ल उम्र फ़ाउंडेशन मुक़र्रर किया था । फिर2017 ई में चौधरी हमीद नस्रुल्लाह ख़ान साहिब की वफ़ात के बाद जो उस वक़्त सदर फ़ज़ल उम्र फ़ाउंडेशन थे, मैंने उनको सदर फ़ज़ल उम्र फ़ाउंडेशन मुक़र्रर

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

किया और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जैसा कि मैंने ज़िक्र किया है यह वफ़ात तक सदर फ़ज़ल उम्र फ़ाउंडेशन रहे। वफ़ात तक अर्थात कि यहां इंग्लिस्तान ईलाज के लिए आने तक, तीन चार महीने पहले तक आप बड़ी मेहनत से फ़ज़ल उम्र फ़ाउंडेशन के काम किया करते थे। सारे इजलासों में बाक़ायदगी से आते, दिलचस्पी लेते। उनके वक़्त में भी काम में काफ़ी फैलाव पैदा हुआ है। उनके पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी अनीसा ताहिर साहिबा हैं और बेटे इस्फ़ंदयार आरिफ़ और तीन बेटियां तय्यबा आरिफ़ और अज़ीज़ा औज और बिना ताहिर आरिफ़ हैं। दो बेटियां ब्याही हुई हैं एक बेटा और बेटी अभी उनकी शादी नहीं हुई। उनकी बेटी तय्यबा आरिफ़ ताहिर साहिबा लिखती हैं कि हमारे पिता आदरणीय ताहिर आरिफ़ साहिब मरहूम को अल्लाह तआला ने बेपनाह दुनयावी तरक्कियों से नवाज़ा मगर आपने हमेशा अहमदियत के तशख़्ख़ुस को बड़ी जुर्रत और ग़ैरत के साथ बरक़रार रखा। निहायत दियानतदार क़ाबिल एव एतबार अफ़्सर थे। धर्म को प्राथिमकता देने वाले, अल्लाह पर तवक्कुल रखने वाले एक विनम्र मिज़ाज के इन्सान थे। शायर थे, अदीब थे, उच्च मुंतज़िम थे, टीचर थे, धार्मिक उलूम को जानने वाले थे, एक ज़िम्मेदार शौहर थे, निहायत दयालु बाप थे और सबसे बढ़कर ये कि आप ख़ुदा और रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम)के इशक़ में भी महव थे। कहती हैं कि हमारी अम्मी कहती हैं कि आपको हमेशा बहुत इंसाफ़ पसंद और नरम मिज़ाज पाया। बिना भेदभाव के छोटे बड़े अमीर ग़रीब हर किसी के साथ ओहदे से हट कर अच्छे व्यवहार से पेश आते। कई रिश्तेदार जज़बात में आ के और अपने ज़ाती ताल्लुक़ की वजह से लिख देते हैं लेकिन उनके बारे में जो भी लिखा जा रहा है क्योंकि मैं उनको ज़ाती तौर पर जानता हूँ इसलिए सब कुछ हक़ीक़त है। वाक़ई यह इस तरह ही थे।

मुबारक सिद्दीक़ी साहिब लिखते हैं कि मरहूम ताहिर आरिफ़ साहिब की तबीयत में आजिज़ी और इनकिसारी थी और ख़लीफ़ वक़्त से इंतिहाई अक़ीदत और इताअत का सम्बन्ध रखने वाले थे। बहुत ही उच्च स्तर के शायर और अदीब थे। कहते हैं मैंने एक बार उनसे कहा कोई अपना पसंदीदा शेअर सुनाएँ। इस पर उन्होंने ख़िलाफ़त से अक़ीदत के बारे में अपना यह शेअर सुनाया कि

आक़ा तेरा ग़ुलाम तेरे पास हो कभी
क़दमों में लौट जाए बदन घास हो कभी

कहते हैं कि एक रोज़ एक दोस्तान बैठक में मैंने कहा ताहिर साहिब अल्लाह तआला ने हर अहमदी को किसी ना किसी रंग में बहुत एज़ाज़ से नवाज़ा है। आपको पुलिस के महिकमे में बहुत बड़े ओहदे का सम्मान मिला है। कहने लगे इस से कहीं बढ़कर बड़ा एज़ाज़ यह है कि मैं अहमदी हूँ और फिर उन्होंने मेरे साथ पढ़ने का भी हवाला दिया कि मैं ख़लीफ़ वक़्त का क्लास फ़ैलो भी रह चुका हूँ। यह मेरे लिए बहुत बड़ा एज़ाज़ है। उनके पिता आदरणीय मौलाना मुहम्मद यार आरिफ़ साहिब ने तालीम की उद्देश्य से उन्हें रब्वह में भेजा था। कॉलेज में भेजा और इस वक़्त क्योंकि हमारे कॉलेज कुछ अर्से बाद ही नेशनलाईज़ हो गए थे तो इसलिए फिर उनके होस्टल में क़ियाम के बजाय उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस को दरख़ास्त की थी और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस से मौलाना मुहम्मद यार आरिफ़ साहिब का बड़ा सम्बन्ध था तो उन्होंने फिर उनका दारुल ज़ियाफ़त में इंतिज़ाम किया था। वहीं रह के उन्होंने अपनी पढ़ाई मुकम्मल की। छात्र जीवन के ज़माने में बे-तकल्लुफ़ी में बहुत सी बातें भी हो जाती हैं, मज़ाक़ होते हैं लेकिन जब हज़रत ख़लीफ़ तुल मसीह अलराबे ने मुझे नाज़िर आला मुक़र्रर किया तो तब से ही उन्होंने मेरे साथ बड़ा इज़्ज़त और एहतिराम का सुलूक करना शुरू किया और फिर ख़िलाफ़त के बाद तो यह अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इख़लास तथा वफ़ा में बहुत बढ़ गए थे

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद करे और उनके बच्चों को भी कामिल वफ़ा के साथ जमाअत और ख़िलाफ़त से वाबस्ता रखे। उनके दोस्तों ने, अज़ीज़ों ने, रिश्तेदारों ने भी यही घटनाई लिखे हैं कि बड़ी आजिज़ी थी, विनय था और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इल्म वाले इन्सान थे।

अभी नमाज़ के बाद मैं उनका जनाज़ा पढ़ाऊंगा। जनाज़ा हाज़िर है यहां तो नमाज़ के बाद इंशा अल्लाह बाहर जाकर मैं जनाज़ा पढ़ाऊंगा। दोस्त जनाज़ा के लिए यहीं अपनी सफ़ें ठीक करें।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 20 सितम्बर2019 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

हस्पताल के उद्घाटन के नतीजा में इन्सानियत की सेवा के बारे में से विश्वव्यापी शौहरत पाएगी। हम ग्वेटामाला के बाशिंदे इस हस्पताल की बुनियाद से बहुत ख़ुशी और आन्नद महसूस करते हैं और ख़लीफ़ा के शुक्रगुज़ार हैं कि आपकी राहनुमाई में नासिर हस्पताल की बुनियाद मुम्किन हुई।

मैं ज़ाती तौर पर भी ख़लीफ़ा की बावक़ार और पर दया वाले व्यक्तित्व से हद दर्जा प्रभावित हूँ कि आपने इन्सानियत की सेवा, आपसी हमदर्दी और मुहब्बत का पैग़ाम दिया।

*मारियो फ़ीगोरवया Mario Figuroa वाइस मिनिस्टर आफ़ हैल्थ अपने विचार बयान करते हुए कहते हैं: मैं हस्पताल को इस के आरम्भ के बुनयादी काम से ही देख रहा हूँ। मैं यहां पहले भी कई बार आ चुका हूँ और मैंने देखा है कि यह किस तरह सामान इत्यादि को प्राप्त कर रहे हैं और हस्पताल के काम करने वाले लोगों को कैसे तलाश कर रहे हैं। और अब यह देखने के लायक़ बहुत ख़ूबसूरत हस्पताल है और हमारे देश के लिए यह एक तरक़्क़ी का निशान है। यह इस इलाक़ा के क़रीबी लोगों की मदद करेगा। यह एक बहुत महान तजुर्बा है। इन्सानियत के बारे में अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी का आपस में उदाहरण योग्य एकता है और यह एक बहुत क़ीमती चीज़ है।

*Congress Woman California नूरमा तोरीस साहिबा बयान करती हैं: आज का प्रोग्राम बहुत प्रभावित करने वाला और कामयाब था और हियूमीनिटी फ़र्स्ट बहुत अच्छा काम कर रही है। आज ख़लीफ़ा की संगत में बैठ कर खाना खाने का अवसर मिला है इस चीज़ ने इस प्रोग्राम को मेरे लिए बहुत ही यादगार बना दिया है। मैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत का भी इस प्रोग्राम के बारे में शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ जो आपकी जमाअत ग्वेटामाला में काम कर रही है। हुज़ूर बहुत अमन पसंद शख़्स हैं जो सारी दुनिया को अमन मुहब्बत और प्यार का पैग़ाम पहुंचा रहे हैं। ग्वेटामाला का नासिर हस्पताल हर मज़हब, मिल्लत और हर रंग तथा नस्ल के लोगों की सेवा करेगा और यह बहुत अच्छा पैग़ाम है।

*Sergio Celis जो कि गोइटे मालन कांग्रेस में बतौर डिप्टी प्रतिनिधि डिस्ट्रिक्ट "साकात पै कीइज़" हैं जहां नासिर हस्पताल बनाया गया है उन्होंने अपने विचार बयान करते हुए कहा: यह एक हमारे देश और इस डिस्ट्रिक्ट के लिए बहुत तारीख़ी मौक़ा है क्योंकि यह हस्पताल सिर्फ और सिर्फ लोगों की मदद के लिए बनाया गया है जो कि ग्वेटामाला का एक अहम मस्ला और ज़रूरत है। यह एक ऐसा काम है कि यहां के हैल्थ मिनिस्टर को भी ऐसा काम करने के लिए क़दम उठाने की ज़रूरत पड़ेगी। मैं जमाअत अहमदिया और हियूमीनिटी फ़र्स्ट का शुक्रगुज़ार हूँ। चार साल पहले लंदन के जलसा सालाना में शिरकत की थी जहां हुज़ूर से हमारी मुलाक़ात हुई थी जिसमें हमने हुज़ूर से दरख़ास्त की थी कि ग्वेटामाला को मेडिकल सहूलतों की ज़रूरत है जिस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि हम ग्वेटामाला में हस्पताल बनाएंगे और आज हम उसे व्यवहारात्मक शक्ल में देख रहे हैं। ख़लीफ़ा एक ऐसे इन्सान हैं जो दुनिया में अमन की स्थापना के लिए कोशिश कर रहे हैं और हर कम्यूनिटी को प्यार का पैग़ाम पहुंचा रहे हैं। यह ऐसी चीज़ है कि हुकूमतों और दूसरे धर्मों को भी यही पैग़ाम फैलाना चाहिए जैसा कि ख़लीफ़ा ने अपनी तक़रीर में ज़िक्र किया है जिससे हर सुनने वाले के दिल में एक सुकून पैदा होता है।

*रोबर्तो कानू (Robert Cano) वाइस मिनिस्टर आफ़ एजूकेशन आफ़ पैराग्वे ने बयान क्या: यह एक बहुत अच्छा ईवंट था और मैं काफ़ी हैरान हूँ कि यह एक ऐसी जमाअत है कि इस के लोगों ने आपस में मिलकर तकमील को पहुंचाया है। और इस से ज़रूरतमंदों की मदद की जाएगी। यही एक उम्दा तरीक़ है कि इन्सानों से व्यवहारात्मक तौर पर प्यार किया जाए। जैसा कि ख़लीफ़ा ने अपनी तक़रीर में ज़िक्र किया था। अगर इन्सानियत यही प्यार का रास्ता अपनाएगी तो फिर दुनिया में अमन स्थापित होगा। इस्लामी मज़हब और कल्चर को बहुत क़रीब से जानने का मेरे लिए अच्छा तजुर्बा था। जमाअत अहमदिया के बारे में मेरे बहुत से सवाल थे जिनके जवाब मुझे यहां आकर मिल गए और कुछ सालों से जमाअत अहमदिया पेराग्वा में भी स्थापित हो चुकी है और इन्हीं की दावत पर यहां आया हूँ ।

*जासीनतो कास्त्रो (Jacinto Castro) साकाटीपे कवाएज़ के भूतपूर्व गवर्नर ने अपने विचार बयान करते हुए कहा: मेरे लिए ख़ुशक़िस्मती है कि हस्पताल की बुनियाद के लिए मुझे भी ईंट रखने की सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मुझे यह भी ख़ुशी है कि यह हस्पताल इन्सानियत की मदद के लिए पूर्ण हो चुका है। हुज़ूर के ख़िताब के बारे में मैं यह कहना चाहूँगा कि इस में अमन और सलामती का पैग़ाम है। लंदन के जलसा सालाना में मुझे एक-बार ख़लीफ़ा की तक़रीर सुनने का अवसर मिला था

जो मुझे अभी भी याद है कि माँ बाप की इज़्ज़त करो ताकि तुम कामयाब रहो और आज के दिन जो हुज़ूर ने तक़रीर की है वह बहुत उम्दा है।

* चीवा वेलासको (Chiva Velasco) जो कि सयाहत और मायान कल्चर (Mayan Culture) के इंटरनेशनल एंबेसडर हैं अपने विचार बयान करते हुए कहते हैं: अल्लाह आप सब लोगों को इस काम का अज्र दे। आपके हस्पताल बनाने का भी शुक्रिया क्योंकि ऐसा हस्पताल पहले कभी इस देश में नहीं बना। लोग मुसलमानों से डरते हैं लेकिन मेरा ख़्याल है कि मुसलमान दिल के बहुत अच्छे और मेहमान नवाज़ हैं।

* एक पत्रकार जिनका नाम Richard है जिन को आज के प्रोग्राम में शिरकत का सौभाग्य नसीब हुआ बयान करते हैं: सबसे अच्छी बात यह है कि ख़लीफ़ा ऐसे देश में आए हैं जो बहुत ग़रीब है और लातीनी अमरीका के किसी देश में पहली बार आए हैं। उनका आना बहुत ज़रूरी था यह एक ऐसा देश है जहां इस्लाम के बारे में लोग सुनते और सोचते हैं और मालूमात प्राप्त करना चाहते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि आइन्दा भी ख़लीफ़ा हमारे पास तशरीफ़ लाएँगे। ख़लीफ़ा की तक़रीर के बारे में यह कहना चाहूँगा कि जमाअत अहमदिया ज़रूरतमंदों की मदद और अमन और प्यार को फैलाने की सोच रखती है। ख़लीफ़ा ने अपने ख़िताब में जो पैग़ाम दिया वह बहुत अच्छा है।

*Aroldo Monterroso (आ रूलदू मोनतीरोसो) ने जो कि एक बैंक के मैनेजर हैं अपने विचार बयान करते हुए कहा: यह एक बहुत अच्छा प्रोग्राम था हमें बहुत तसल्ली है कि हमारे देश को इस से मदद मिलेगी। यह एक बहुत कशिश वाली तक़रीर थी और बहुत अच्छा पैग़ाम था जिसे हुज़ूर ने पूरी उम्मते मुस्लिमा की तरफ़ से दिया है कि इन्सानियत की मदद करना सब का फ़र्ज़ है। जो सबसे अच्छी बात पसंद आई है वह यह कि लोगों की बेलौस मदद की जाए और मेरे लिए यह बात भी बहुत दिलचस्प थी कि जमाअत अहमदिया की फ़िलोसफ़ी क्या है और जमाअत इस देश के लिए क्या कर रही है।

* ग्वेटामाला के एक वेटरनरी डाक्टर गीलरमो गोनज़ालज़ साहिब(Gullermo Gonzalez) बयान करते हैं: यह एक बहुत अच्छा प्रोग्राम था और हम जमाअत अहमदिया के शुक्रगुज़ार हैं कि इस ने यह मिशन यहां शुरू किया। ख़लीफ़ा की तक़रीर ऐसी थी जो इन्सान को एहसास दिलाती है कि एक इन्सान को कैसे ज़रूरतमंदों की मदद करनी चाहिए और यह एक ऐसा काम है जिसे आपकी जमाअत बहुत समय से करती चली आ रही है और हमें उम्मीद है कि आप यह काम जारी रखेंगे। और यह भी सबसे अच्छा लगा है कि आप लोगों ने कोई अन्तर नहीं की यह हस्पताल हर ज़रूरतमंद के लिए बनाया गया है।

*ग्वेटामाला के एक डाक्टर Jorge Samayoa ने बयान किया कि: आज का event बहुत ख़ूबसूरत और ज़बरदस्त था। इतने लोग बाहर से आए हैं और सब का एक ही मक़सद है कि आपसी प्यार और मुहब्बत को बढ़ावा दिया जाए। सब का एक ही मक़सद नज़र आ रहा है। ख़लीफ़ा साहिब की तक़रीर ना सिर्फ ग्वेटामाला के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए है। ग्वेटामाला के इतिहास में आज का दिन महफ़ूज़ हो गया है कि ख़ुदा का ख़लीफ़ा ग्वेटामाला आया है। आपका बहुत बहुत शुक्रिया कि मुझे इस बरकतों वाले प्रोग्राम में शिरकत के लिए बुलाया गया।

* जमाअत के एक दोस्त राऊल मसीली (Raul Meseli)ने अपने विचार बयान करते हुए कहा: आज मेरी ख़लीफतुल मसीह के साथ पहली मुलाक़ात थी। मैं हुज़ूर से मिल कर बहुत मुस्तफ़ीज़ हुआ हूँ। मैंने हुज़ूर के बारे में सुना हुआ था लेकिन पहले कभी मिला नहीं था । हुज़ूर वास्तव में एक सच्चे और रुहानी इन्सान हैं और मैं इस बात को सराहता हूँ कि आपने अहमदिया मुस्लिम जमाअत ग्वेटामाला को यह हस्पताल बनाने का अवसर दिया है और हम इस हैल्थ कैअर से वास्तविक रंग में लाभान्वित हो सकेंगे इसी तरह इस ट्रेनिंग से भी जो हमारे लोकल डाक्टरों को यह हस्पताल मुहय्या करेगा। मैं कुछ शब्दों में बताना चाहूँगा कि ख़लीफ़ा को इन्सानियत से प्यार है और यही वजह है कि वह यहां तशरीफ़ लाए हैं और इस्लाम के बहुत से उद्देश्यों में से यह भी एक मक़सद है ।

* मिस दूनीस (Miss Donis)जो कि एक अख़बार की कमर्शीयल डायरेक्टर हैं बयान करती हैं: आज का प्रोग्राम एक बहुत प्यारा और शानदार प्रोग्राम था। मैं आप को इस पर मुबारकबाद भी देना चाहती हूँ और यह भी कहना चाहती हूँ कि ऐसे प्रोग्राम हमारे ग्वेटामाला में और अधिक होने चाहिऐं। ख़लीफ़ा साहिब का ख़िताब एक बहुत प्यारा और इन्सानियत से प्यार भरा मज़मून था। मैं मुबारकबाद देना चाहती हूँ कि आप ने एक इतना महान हस्पताल लोगों की भलाई के लिए स्थापित किया है और हमारे हर ज़िला में ऐसे प्रोग्राम होने चाहिऐं। यह एक बहुत सम्मान योग्य बात होगी अगर हम ऐसे प्रोग्राम अपने हर इलाक़ा में आयोजित करें।

*ईल पैरौ दीका अख़बार के एक पत्रकार जिनका नाम फिरना नदो पी नेता (Fernando Pineta) है अपने विचार बयान करते हुए कहते हैं: ख़लीफ़ा साहिब की तक़रीर बहुत प्यारी, दिल पर असर करने वाली और मुहब्बत भरी थी। ख़लीफ़ा से मिलकर मैंने बहुत अच्छा महसूस किया, पहली बार हुज़ूर को इतने क़रीब से देखकर मेरे दिल को एक सुकून मिला है जिसको मैं बयान नहीं कर सकता। इसी तरह यह भी कहना चाहूँगा कि नासिर हस्पताल का प्राजैक्ट बहुत प्यारा प्राजैक्ट है हमें वास्तव में ऐसे ही प्राजैक्ट और अधिक चाहिए जो हमारे देश ग्वेटामाला को फ़ायदा पहुंचा सकें।

* देश कोस्टारिका से आने वाले एक नई बैअत करने वाले अहमदी Jairo साहिब ने बयान किया कि : आज का event एक अच्छा ईवंट था। मेरे ख़्याल में ग्वेटेमाला के लोगों में जो बेचैनी थी कि उनकी मेडिकल मदद की जाए। इस को दूर करने के लिए नासिर हस्पताल निहायत मुफ़ीद साबित होगा। इंशाअल्लाह।

* मिस पातरीसया(Miss Patricia) जो कि नासिर हस्पताल की ऐडमिनिस्ट्रेटर हैं अपने भावनाओं को प्रकट करते हुए कहती हैं: आज का प्रोग्राम बहुत अच्छा था। काफ़ी अहम शख़्सियात हुज़ूर को मिलने आई थीं। लोगों की एक भीड़ थी जो हुज़ूर की एक झलक देखने के लिए दूर दराज़ के इलाक़ों से यहां इकट्ठा हुई थी। उनमें वे लोग भी शामिल थे जिन्होंने इस प्रोजेक्ट पर विश्वास किया और इस नासिर हस्पताल के लिए चन्दे भी उपलब्ध किए। हुज़ूर का आज का ख़िताब बहुत उम्दा था और मुझे जो बात सबसे ज़्यादा पसंद आई वो यह थी कि सृष्टि से हमदर्दी और दया की जाए। यही वह मर्कज़ी बात है जो ख़लीफ़ा ने बयान फ़रमाई। नासिर हस्पताल के भविष्य को लेकर और अधिक बयान किया कि यह हमारे लिए बहुत बड़ा चैलेंज होगा क्योंकि अभी बहुत से प्लान हैं जिन्हें व्यवहारात्मक रूप देना है लेकिन हम बहुत ख़ुश हैं और आइन्दा भी मेहनत से काम करेंगे।

*Carlos Ranjel जो कि ऐस ए एंड मिस्ट्रीज़ के प्रतिनिधि के तौर पर इस प्रोग्राम में शामिल हुए थे अपने विचार बयान करते हुए कहते हैं: आज का प्रोग्राम बहुत अच्छा था और निहायत उम्दा तरीक़ा से आयोजित किया गया था। हम दिल की गहराई से हुज़ूर का शुक्रिया अदा करते हैं। अल्लाह करे हम भी नासिर हस्पताल की मदद कर सकें। हुज़ूर अनवर के ख़िताब के बारे में कहा कि हुज़ूर का ख़िताब बहुत अच्छा था। हुज़ूर ने फ़रमाया कि दूसरों से बिना किसी ज़ाती मक़सद के मुहब्बत और हमदर्दी की जाए। हम यह पैग़ाम लेकर साथ जा रहे हैं। बहुत शुक्रिया, आपको इस हस्पताल की बुनियाद पर मुबारकबाद। मैं उम्मीद करता हूँ कि गोइटे मालन लोगों की तरफ़ से आपको भरपूर सहयोग प्राप्त रहेगा।

*विक्टर होगो रियो इस (Victor Hugo Rivas) जो कि एक बैंक ऑफीसर हैं बयान करते हैं: जमाअत का माटो बहुत अच्छा है और यह पैग़ाम जो आपकी जमाअत यहां लाई है कि सृष्टि की मदद करना और विभिन्न इलाक़ों में सेहत की सहूलतें मुहय्या करना जिसकी देश को ज़रूरत है बहुत ही अच्छा है। मैंने ख़लीफ़ा साहिब का ख़िताब भी सुना। इस महान ख़िताब का ख़ुलासा यही था कि सृष्टि से हमदर्दी करना और यहां जो नासिर हस्पताल खोला गया है यह उस का एक स्पष्ट और ज़िन्दा उदाहरण है।

* एक स्थानीय गोइटे मालन औरत Luisa Giron अपने विचार बयान करते हुए कहती हैं: हस्पताल की उद्घाटन आयोजन भावनाओं से भरा हुआ था। यह एक बहुत बड़े प्रोजेक्ट का आरम्भ है जिससे हज़ारों लोगों को फ़ायदा पहुँचेगा। ख़लीफ़ा का हस्पताल के उद्घाटन पर आना एक महान बरकत है और उनकी मौजूदगी में बैठने से सुकून महसूस हुआ।

* एक गोइटे मालन डाक्टर दयाना कांपोस (Diana Campos) ने बयान किया कि : हुज़ूर के ख़िताब में जो ग़रीबों की मदद करने का पैग़ाम था मैं ख़ुद भी इस पर अनुकरण करूँगी। मज़हब भी यही सिखाता है कि ख़ुदा का शुक्र इस तरह पर अदा किया जाए कि ग़रीबों की मदद की जाए। ख़लीफ़ा की तक़रीर इस हवाले से बहुत असर करने वाली थी कि हर ज़रूरतमंद की मदद की जाए। यह पैग़ाम मुझे सबसे ज़्यादा अच्छा लगा कि जहां वास्तविक इस्लाम होगा वहां प्यार होगा और यह भी बहुत पसंद आया कि ख़ुदा की लिए आप हर ग़रीब की मदद करेंगे। मैं शुक्रिया भी अदा करना चाहती हूँ कि आपने इस काम के लिए ग्वेटामाला का इंतिख़्वाब किया। हम बहैसीयत क़ौम उम्मीद करते हैं कि आइन्दा भी ख़लीफ़ा वक़्त हमारे पास तशरीफ़ लाएँगे।

* एक स्थानीय गोइटे मालन बिज़नस वूमन ने अपने विचार बयान करते हुए कहा कि: मुझे आपके ख़लीफ़ा की तरफ़ से दिया जाने वाला प्यार और अमन का पैग़ाम बहुत अच्छा लगा है और यह भी कि बिना किसी अज्र के ज़रूरतमंद की मदद करना वास्तविक इस्लाम की रूह है। यह भी सुनकर अच्छा लगा कि ज़रूरतमंद के मांगने से पहले ही उस की मदद करो।

*Jorge Navas जो कि कमर्शीयल इंडस्ट्रीज़ की नुमाइंदगी में इस प्रोग्राम में शामिल हुए थे बयान करते हैं: यह प्रोग्राम ग्वेटामाला के लिए बहुत उम्दा प्रोग्राम था। मैं शुक्रिया भी अदा करना चाहूँगा कि इतनी अच्छी नीयत के साथ आप लोगों ने यह हस्पताल बनाया है जो ग्वेटामाला के लोगों की मदद करेगा।

* एवेलिन वाज़क़स (Evelyn Vazquez) जो एक गोइटे मालन पत्रकार हैं, ने कहा: मुझे जिस चीज़ ने सबसे ज़्यादा प्रभावित किया है वह यह है कि मज़हब में ज़बरदस्ती नहीं है बल्कि यह भी कि एक दूसरे का ख़्याल रखना चाहिए और यही पैग़ाम ख़लीफ़ा ने हमें दिया है इसी तरह यह भी कि हम सब बराबर के हुक़ूक़ रखते हैं। हर इन्सान को एक उम्दा ज़िन्दगी का स्तर मिलना चाहिए जो कि हमारे देश में इस वक़्त समाप्त है। मुझे इस बात की भी ख़ुशी है कि इस हस्पताल के उद्घाटन से बहुत से लोगों को मैडीकल के बारे में फ़ायदा होगा और वे ग़रीब वर्ग जो पैसे ना होने की वजह से डाक्टरों के पास जाने से डरता है यह हस्पताल उन लोगों की मदद करेगा।

24 अक्तूबर2018 ई (दिनांक बुधवार)

ग्वेटामाला से रवानगी और हीवसटन (अमरीका) में पधारना

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह पाँच बजे होटल के हाल में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी अपार्टमंट में तशरीफ़ ले गए।

आज प्रोग्राम के अनुसार ग्वेटामाला का दौरा पूर्ण करने के बाद वापस हीवसटन (Houston) अमरीका के लिए रवानगी थी। प्रोग्राम के अनुसार 10 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ होटल से बाहर तशरीफ़ लाए। जमाअत के लोगों ग्वेटामाला के मर्दो औरतों और अन्य देशों मैक्सीको, बेलीज़ इत्यादि के नई बैअत करने वाले अहमदी मर्द औरत और बच्चे बच्चियां सुबह से ही अपने प्यारे आक़ा को विदा कहने के लिए जमा होने शुरू हो गए थे। जैसे ही हुज़ूर अनवर बाहर तशरीफ़ लाए तो उन सब ने अपने हाथ हिलाते हुए हुज़ूर अनवर को विदा कहा। बच्चियों और लजना ने अपनी लोकल ज़बान में दुआइया नज़्में पेश कीं। हुज़ूर अनवर दया करते हुए इन लोगों के पास कुछ देर के लिए रौनक अफरोज़ रहे। इस दौरान सभी अपने आक़ा के दर्शन से फ़ैज़याब होते रहे और बच्चियां नज़्में पढ़ती रहीं।

इस के बाद 10 बजकर 47 मिनट पर हुज़ूर अनवर ने सामूहिक दुआ करवाई और यहां से एयरपोर्ट के लिए रवानगी हुई। पुलिस ने क़ाफ़िला को Escort किया। 11 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की एयरपोर्ट पर तशरीफ लाए। हुज़ूर अनवर की आने से पहले सामान की बुकिंग और बोर्डिंग कार्ड के हुसूल और इमीग्रेशन की कार्रवाई पूर्ण हो चुकी थी। एक विशेष प्रोटोकोल प्रबंध के अन्तर्गत हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ एक स्पेशल लाओनज में तशरीफ़ ले आए।

1बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जहाज़ पर सवार हुए। यूनाईटिड एयर लाईन की परवाज़ UA-1903 एक बजकर तीस मिनट पर ग्वेटामाला से हीवसटन अमरीका के लिए रवाना हुई और हीवसटन के स्थानीय वक़्त के अनुसार जहाज़ 5 बजकर 10 मिनट पर जॉर्ज बुश हीवसटन एयरपोर्ट पर उतरा। हीवसटन का वक़्त ग्वेटामाला से एक घंटा आगे है। विशेष प्रोटोकोल प्रबंध के अन्तर्गत इमीग्रेशन की कार्रवाई हुई और इस के बाद 6 बजकर10 मिनट पर यहां से जमाअत का सैंटर मस्जिद बैतुल समीअ के लिए रवानगी हुई। ज़ुहर तथा असर की नमाज़ें वक़्त की मुनासबत से सफ़र के दौरान अदा की गईं।

एयरपोर्ट पर आदरणीय डाक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब नायब अमीर यू.ऐस.ए और डाक्टर अताउल रब साहिब सेक्रेटरी उमूरे ख़ारिजा ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश आमदीद कहा। इस अवसर पर हीवसटन के मेयर के प्रतिनिधि भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के स्वागत के लिए एयरपोर्ट पर मौजूद थे। जब एयरपोर्ट से मस्जिद बैतुल समीअ जाने के लिए रवानगी हुई तो पुलिस के छ: मोटर साईकलज़ ने क़ाफ़िला को Escort किया और मिशन हाऊस तक का सारा रास्ता क्लीयर करते रहे।

6 बजकर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का जमाअत का सैंटर बैतुल समीअ में तशरीफ हुआ जहां हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का भरपूर और जोश पूर्ण स्वागत किया गया। हीवसटन और इस के इर्दगिर्द की स्थानीय जमाअतों के अतिरिक्त दूसरी विभिन्न जमाअतों डलास,ऑस्टियन, बोस्टन,सिलवर स्प्रिंग,लारईल, लास एंजलीज़, बाल्टीमोर, तेनेस्सी, बे पाओनट,जॉर्जिया और शिकागो से जमाअत के लोग बड़े लंबे सफ़र तय करके अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए हीवसटन थे। लास एंजलीज़, सिलवर स्प्रिंग और Laurel की जमाअतों से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ साढ़े तीन घंटे जहाज़ का सफ़र तय करके पहुंचे थे। बाल्टीमोर से जहाज़ से आने वाले साढ़े तीन घंटे की फ़्लाईट और बे पाओनट और बोस्टन से अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए आने वाले लोगों चार घंटे की फ़्लाईट लेकर पहुंचे थे। कैनेडा और जर्मनी से भी कुछ लोग हुज़ूर अनवर की आने से पहले हीवसटन पहुंचे थे और आज अपने आक़ा के स्वागत के लिए मौजूद थे।

जैसे ही हुज़ूर अनवर की गाड़ी मस्जिद बैतुल समीअ के बाहरी गेट से अंदर दाख़िल हुई तो उन सारे लोगों मर्दों औरत ने बड़े पुरजोश अंदाज़ में नारे लगाए। बच्चियों के ग्रुपस ने स्वागत गीत पेश किए। प्रत्येक छोटा बड़ा, मर्द औरत, जवान बूढ़ा अपने हाथ उठाए हुए अपने प्यारे आक़ा को ख़ुश आमदीद कह रहा था और ज़यारत के सौभाग्य से फ़ैज़याब हो रहा था। इन सब के लिए एक बहुत ही ख़ुशी का अवसर था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला 22 अक्तूबर को हीवसटन से ग्वेटामाला के लिए रवाना हुए थे और अब दो दिन के बाद वापस तशरीफ़ लाए थे। शाम का वक़्त था और अंधेरा छा रहा था और यह सारा कम्पलैक्स, उस की सारी इमारात और दरख़्त और बाड़ और पौदे रंग-बिरंगी रौशनियों से जगमगा रहे थे।

एक तरफ़ यह सारा इलाक़ा रोशन था तो दूसरी तरफ़ यहां केरहने वालों के दिल भी ख़ुशी तथा आन्नद से रोशन थे कि हुज़ूर अनवर अब दुबारा उनके पास आए हैं और अब कुछ दिन यहां निवास फ़रमाएँगे और हम दिन रात अपने प्यारे आक़ा के क़ुरब से बरकतें प्राप्त करेंगे। अपने आक़ा के अनुकरण में नमाज़ें अदा करेंगे और अपने आक़ा की दुआओं से हिस्सा पाएँगे और उन मुबारक और बरकतों वाले दिनों के लम्हा लम्हा से अपने ईमान को प्रकाश बख़्शेंगे और दिल का सन्तोष प्राप्त करेंगे।

हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

इस के बाद साढ़े आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

25 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक जुमेरात)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छ: बजे मस्जिद बैतुल-समीअ हीवसटन में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दो बजे मस्जिद बैतुल समीअ में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। प्रोग्राम के अनुसार साढ़े पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए।

हैरीस काओनटी के कमिशनर की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

*एक मेहमान Harris County Precint 4 के कमिशनर Jack Cagle साहिब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात के लिए आए हुए थे। कमिशनर साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया।

कमिशनर साहिब ने जिन्नाह टोपी पहनी हुई थी जो उन्हों ने अपने दोस्त नासिर हफ़ीज़ देश साहिब (ज़ईम अंसारुल्लाह वसीकरटरी तब्लीग़ हीवसटन) से प्राप्त की थी। महोदय ने कहा यह टोपी उन पर जच रही है लिहाज़ा वह इस टोपी को रखना चाहेंगे। इस पर हुज़ूर अनवर ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि आप यह टोपी रख सकते

हैं। नासिर अपने लिए दूसरी टोपी ख़रीद लेंगे।

कमिशनर साहिब ने निवेदन किया कि मुझे इल्म हुआ है कि हुज़ूर दुनिया के विभिन्न देशों का दौरा करते आ रहे हैं। आप इतना ज़्यादा सफ़र और काम के मध्य आराम कैसे करते हैं? मेरा अमला तो मेरा शैड्यूल इस तरह बनाता है कि मैं आराम कर सकूं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अगर मेरे लोग मेरा शेड्यूल बनाएँ तो शायद यह बिलकुल भी मुझे आराम ना करने दें। लेकिन ख़ुश-क़िस्मती से मैं अपना शेड्यूल ख़ुद बनाता हूँ लिहाज़ा आराम के लिए वक़्त निकाल लेता हूँ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि चूँकि मैंने आपको जिन्नाह कैप में आते देखा था तो ख़्याल किया शायद आप अहमदी हैं और यहां विज़ट करने आए हैं। इस पर कमिशनर ने निवेदन किया कि इलैक्शन में सिर्फ एक हफ़्ता बाक़ी है लेकिन चूँकि हुज़ूर यहां तशरीफ़ लाए हुए हैं इसलिए मैं हुज़ूर से मुलाक़ात का अवसर हाथ से जाने नहीं देना चाहता था। आख़िर पर कमिशनर साहिब ने हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ की दरख़ास्त की और मुलाक़ात के लिए वक़्त देने पर शुक्रिया अदा किया।

यह मुलाक़ात 5 बजकर 40 मिनट तक जारी रही। इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

फ़ैमिली तथा व्यक्तिगत मुलाक़ातें और लोगों के ईमान वर्धक विचार

आज शाम के इस प्रोग्राम में 63 फ़ैमिलीज़ और 16 लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर मुलाकात का सौभाग्य पाया। कुल तौर पर 325 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी लोगों और फ़ैमिलीज़ ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए। मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलीज़ हीवसटन की जमाअत के अतिरिक्त अन्य विभिन्न नौ जमाअतों से आई थीं। अटलांटा, ओरलानडो और नॉर्थ कैरोलीना से आने वाली फ़ैमिलीज़ 960 मील से अधिक का सफ़र 12 से 14 घंटों में तय करके पहुंची थीं।

आज सभी ऐसे लोगों की मुलाक़ात थी जो अपनी ज़िन्दगी में पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पा रहे थे। एक बड़ी संख्या इन फ़ैमिलीज़ की थी जो पिछले सालों में विभिन्न देशों से होते हुए बड़ी तकलीफ़ और कष्ट बर्दाश्त करके यहां पहुंची थीं। आज यह लोग कितने ही ख़ुशनसीब थे कि अपने प्यारे आक़ा के क़ुरब में कुछ क्षण गुज़ारें, उनके ग़म और दु:ख काफ़ूर हुए और दिल सन्तोष से भर गए और कभी ना ख़त्म होने वाली दुआओं के खज़ाने लेकर यहां से रुख़स्त हुए।

*मुलाक़ात करने वाले एक दोस्त नाहीद अज़हर शेख़ साहिब बयान करते हैं कि मैं अपनी पत्नी और बेटे के साथ मुलाक़ात का शरफ़ प्राप्त करने आया था। जब कमरा में दाख़िल हो कर हुज़ूर अनवर के चेहरा पर नज़र पड़ी तो आपका चेहरा ख़ुदाई नूर से भरा हुआ मालूम हुआ। उनकी पत्नी कहने लगीं कि मुझे अपनी ख़ुशक़िसमती पर रशक आ रहा है कि हुज़ूर अनवर के क़ुरब की कुछ घड़ियाँ नसीब हुईं। पहले हम हुज़ूर को TV पर देखा करते थे आज अपने सामने देख लिया।

*एक दोस्त मुहम्मद सलीम साहिब बयान करते हैं कि पहले हम हुज़ूर अनवर को TV पर ही देखा करते थे। आज हमारी ज़िन्दगी की पहली मुलाक़ात थी। हम दोनों मियां बीवी बहुत nervous थे कि हम कैसे बात करेंगे लेकिन जब हम हुज़ूर अनवर के दफ़्तर में दाख़िल हुए तो हुज़ूर अनवर ने इतने प्यार से और मुस्कुरा कर बात की कि हमारी घबराहट ख़ुद बख़ुद दूर हो गई। मुझे और मेरी पत्नी को मुलाक़ात के दौरान बार-बार यह एहसास होता था कि अल्लाह तआला के फ़रिश्ते हुज़ूर अनवर के आस-पास हैं। मैं हुज़ूर अनवर को कई-बार ख़्वाब में देख चुका हूँ लेकिन आज खुली आँखों से अपने ख़्वाबों को पूरा होते देखकर ऐसा महसूस कर रहा हूँ जैसे अब मैं एक नया वजूद हूँ।

* बासित मजोका साहिब ने बताया कि मैं अभी हुज़ूर से मुलाक़ात करके आया हूँ। मुझे लग रहा है कि जैसे मैं ख़्वाब देख रहा हूँ। महोदय के छोटे भाई उसमान साहिब अपनी पत्नी के साथ मुलाक़ात में शामिल थे। कहते हैं मुलाक़ात से पहले में बहुत ज़्यादा डरा हुआ था कि हम से बात करते हुए कोई ग़लती ना हो जाएगी। जैसे ही हम अंदर दाख़िल हुए हुज़ूर ने हमसे प्यार से बातें कीं और हमारी सारी घबराहट दूर हो गई।

* सय्यद मक़सूद अहमद महबूब साहिब बयान करते हैं कि वह अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ अटलांटा से 12 घंटे का सफ़र द्वारा करके पहुंचे थे। आज हमारी ज़िन्दगी की पहली मुलाक़ात थी। जब मुलाक़ात शुरू हुई तो मैं मुहब्बत से ख़ुद पर क़ाबू ना पा सका और अपने आप रो पड़ा, मेरी आवाज़ बंद हो गई। आज मैं अपनी ख़ुश-क़िसमती पर गर्व कर रहा हूँ। 12 घंटे के सफ़र की थकावट हुज़ूर अनवर के साथ कुछ लम्हे गुज़ारने से ऐसी दूर हुई कि गोया हमने कोई सफ़र ही नहीं किया।

*मुलाक़ात करने वाले एक दोस्त फ़िर्दोस अहमद साहिब ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा कि आज हुज़ूर अनवर के साथ मेरी यह पहली मुलाक़ात थी। मैं अपनी अवस्था को शब्दों में ढाल नहीं सकता। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का यह अर्थ नहीं कि मैं दूसरे अहमदियों से बेहतर हूँ बल्कि उस का अर्थ यह है कि अब मुझे पहले से बढ़कर अपने अंदर सकारात्मक तबदीली लाने की कोशिश करनी पड़ेगी।

*एक औरत कुर्रतुल एन साहिबा बयान करती हैं कि आज हमारी पहली मुलाक़ात थी। हुज़ूर से मिलकर एक अजीब ख़ुशी महसूस कर रही हूँ। हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर नूर ही नूर पाया। हुज़ूर अनवर ने मेरे बच्चों के बारे में नसीहत करते हुए फ़रमाया कि बच्चों को फ़ोन और iPad इत्यादि से दूर रखें।

*फ़रीद अनवर काहलों साहिब कहते हैं कि ख़ाकसार ने 2010 ई में ख़्वाब देखा था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम खड़े हैं और आप के बाएं हाथ में एक छड़ी है और दूसरी तरफ कुछ लोगों खड़े हैं। आप ख़ाकसार को आगे आने का फ़रमाते हैं और कुछ देर बाद फ़रमाते हैं। आएं तस्वीर खिचवा लें। मैंने यह ख़्वाब हुज़ूर अनवर की सेवा में सुनाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: बहुत मुबारक ख़्वाब है। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात करके और तस्वीर खींचवा कर मुझे यक़ीन हो गया है कि मेरा यह ख़्वाब आज पूरा हो गया है।

*एक दोस्त असद रसूल साहिब बयान करते हैं कि मेरी हुज़ूर अनवर से पहली मुलाक़ात थी। मैंने हुज़ूर अनवर के वजूद में एक निहायत ही शफ़ीक़ और मुहब्बत करने वाला रुहानी बाप पाया है जो हमारा दर्द रखता है। मुलाक़ात के दौरान जब मैंने आक़ा से तबर्रुक प्रदान किए जाने की दरख़ास्त की तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पहले अपनी बीवी को पाकिस्तान से लेकर आओ फिर तबर्रुक दूँगा।

*एक अफ्रीकन नस्ल के नई बैअत करने वाली अहमदी औरत हबीबा डाबोह साहिबा बयान करती हैं: मैंने कुछ समय पहले ही बैअत की है। अपने प्यारे इमाम के साथ मिलकर एक अजीब सी ख़ुशी का एहसास है जो बयान नहीं की जा सकती।

*एक दोस्त बाबर अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहिब बयान करते हैं कि मैं बहुत ख़ुश हूँ कि आज ख़ुदा ने मुझे यह दिन दिखाया है। मैं महसूस करता हूँ कि जैसे मेरा वजूद जन्नत में परवाज़ कर रहा है। मुलाक़ात के दौरान जब में अपने भावनाओं पर क़ाबू ना पा सका तो रो पड़ा। अब यूं महसूस कर रहा हूँ जैसे मेरी एक नई पैदाइश हुई है।

*एक साहिब मसरूर अब्दुल क़ादिर साहिब बयान करते हैं कि ख़लीफ़ा वक़्त

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 3 October 2019 Issue No. 40

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

से पहली मुलाक़ात थी। शब्दों में बयान नहीं कर सकता इस वक़्त जो मेरे दिल की अवस्था है। मुलाक़ात के दौरान मुझे यूं मालूम होता था जैसे हुज़ूर अनवर के गिर्द रोशनी का एक हाला है। हुज़ूर अनवर के क़ुरब में गुज़ारे हुए यह कुछ लम्हे मेरी ज़िन्दगी के सबसे क़ीमती लम्हे हैं जो मैं रहते दम तक याद रखूंगा। हुज़ूर अनवर से आज की यह मुलाक़ात मुझे अल्लाह तआला के सौ गुना और क़रीब ले आएगी। मैंने इरादा कर लिया है कि अब हर-रोज़ अच्छाई की तरफ़ ही क़दम बढ़ाऊंगा। इंशाअल्लाह।

*एक दोस्त रामिश ख़ान साहिब बयान करते हैं। हुज़ूर अनवर से यह मेरी पहली मुलाक़ात थी। मुलाक़ात से पहले मुझे घबराहट और बेचैनी थी। लेकिन जैसे ही मेरा हाथ हुज़ूर अनवर के हाथ को छुआ तो मेरी सब घबराहट और बेचैनी ख़ुद बख़ुद ग़ायब हो गई और मुझे बहुत सुकून और इतमीनान नसीब हुआ।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम साढ़े नौ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुल समीअ तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

26 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक जम्अतुल मुबारक)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छः बजे मस्जिद बैतुल समीअ में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक और पत्र देखे और हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

आज जुमतुल-मुबारक का दिन था। हीवसटन की ज़मीन से ख़लीफतुल मसीह का यह पहला ख़ुत्बा जुम्अः था जो MTA इंटरनेशनल के द्वारा सारी दुनिया में सीधा Live प्रसारित हुआ।

हीवसटन के अतिरिक्त अमरीका की दूसरी विभिन्न जमाअतों से जमाअत के लोगों बड़े लंबे और लम्बा सफ़र तय करके अपने प्यारे आक़ा की इक़्तदा में नमाज़ जुम्अः की अदायगी के लिए पहुंचे। जमाअत तीनी सी से आने वाले लोग 830 मील की दूरी 12 घंटे में तय करके पहुंचे थे। जॉर्जिया से आने वाले लोगों 13 घंटे का सफ़र द्वारा कार द्वारा तय करके पहुंचे थे। इसी तरह कीनटोके से आने वाले 1050 मील का सफ़र 16 घंटों में तय करके पहुंचे। जबकि मियामी से आने वाले जहाज़ द्वारा तीन घंटे का सफ़र तय करके पहुंचे। बाल्टीमोर, लास अंजलीज़,लारईल और सिलवर स्प्रिंग की जमाअतों से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ जहाज़ द्वारा साढ़े तीन घंटे का सफ़र तय करके पहुंचीं। बोस्टन और बे पाओनट से जो लोग हीवसटन पहुंचे वे जहाज़ द्वारा 4 घंटे का लंबा सफ़र तय करके पहुंचे।

नमाज़ जुम्अः की अदायगी के लिए विभिन्न दूर की जमाअतों से लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या जुम्मेरात की शाम तक हीवसटन पहुंच गई थी। जुम्अः की अदायगी का प्रबंध मस्जिद के अतिरिक्त विभिन्न मार्कीज़ लगा कर किया गया था। नमाज़ जुम्अः में शामिल होने वालों की संख्या अठारह सौ से अधिक थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 1 बजे मस्जिद बैतुल समीअ में तशरीफ़ ला कर ख़ुत्बा जुम्अः इरशाद फ़रमाया। (ख़ुत्बा जुम्अः पूर्ण अख़बार बदर 8 नवंबर 2018 ई में प्रकाशित हो चुका है)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़ुत्बा जुम्अः 2 बजकर 5 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुम्अः के साथ नमाज़ अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

दीनी मालूमात

प्रश्न 1 क़ुर्आन करीम की कितनी सूरतें, आयतें, रुकू और कितने शब्द हैं ?

उत्तर -क़ुर्आन करीम की 114 सूरतें, 6666 आयात, 540 रुकू, 86430 शब्द हैं। नोट :- आयात और अलफ़ाज़ की तादाद में इखतेलाफ हैं। उसका कारण ये है कि कुछ लोग बिसमिल्ला को हर सूरत की आयत शुमार करते हैं और कुछ नहीं। इसी तरह कुछ के नज़दीक कुछ जुमले एक आयत होते हैं, जबकि दूसरों के नज़दीक वो पूरी आयत नहीं होते वरना सब के नज़दीक इत्तेफाक के साथ क़ुर्आन करीम बिस्मिल्लाह की अलिफ से लेकर वन्नास की सीन तक बिल्कुल वही है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरा था।

प्रश्न 2 क़ुर्आन करीम के जमाँ करने और लिखने के विषय में संक्षिप्त से लिखें।

उत्तर -नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खुद इलहामे इलाही के अंतरगत क़ुर्आन करीम को इकट्ठा किया और वही इलाही के मुताबिक तरतीब देकर और लिखवाकर महफूज़ किया। हज़रत अबुबकर रज़ी अल्लाहो अन्हो ने अपने ज़माना खिलाफ़त में हज़रत जैद बिन साबित रज़ि अल्लाहो अन्हो से जो वही लिखने वाले थे उस लिखे हुए क़ुर्आन कि जुज़ बंदी करवाकर इसे एक सहीफा के शकल में महफ़ूज़ किया। इस के बाद हज़रत उसमान रज़ी अल्लाहो अन्हो ने अपने दौरे खिलाफत में इसी सहीफ़ा इलाही की चन्द नकलें करवा कर एक-एक कापी इस्लामी देशों में भिजवाई और इस तरह क़ुर्आन करीम को दुनीया में फैलाया। आज क़र्आन करीम उसी सूरत में हमारे सामने है। (दीबाचा तफ़सीरुल क़ुर्आन पृष्ठ 257)

प्रश्न 3 हिफ़ाज़ते क़ुर्आन करीम के विषय में अल्लाह तआला ने क्या वादा फ़रमाया है ?

उत्तर :- اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अल हिज्र - 10) इन्ना नहनो नज़्ज़लनज़ जिकरा व इन्ना लहू लहाफेज़ून। अर्थ:- इस ज़िकर अर्थात् क़ुर्आन को हमने ही उतारा है और हम यकीनन उसकी हिफाज़त करेंगे।

प्रश्न 4 क़ुर्आन करीम की पहली दो और आखरी दो सुरतों के नाम बताएँ ?

उत्तर :- पहली दो सूरतें फातीहा और सूरा: बकरा हैं और आखरी दो सूरा: अलफलक और सूरा: अन्नास हैं। आखरी दोनों सूरतों को "मुअव्वज़ तैन" भी कहते हैं। क्योंकि ये दोनों "कुल आऊज़ो" से शुरू होती हैं। इन दोनों में आखरी ज़माने के फितने से महफूज़ रहने की दुआ भी सिखाई गई हैं ।

प्रश्न 5 क़ुर्आन करीम की सबसे बड़ी और सबसे छोटी सूरत कौन सी है ?

उत्तर :- सूरा: बकरा सबसे बड़ी और सूरा: कौसर सबसे छोटी है।

प्रश्न 6 नुज़ुल (उतरने) के लिहाज़ से क़ुर्आन करीम की पहली और आखरी आयत कौन सी है ?

उत्तर :-सबसे **पहली आयत - اِقۡرَاۡ بِاسۡمِ رَبِّکَ الَّذِیۡ خَلَقَ** (अलक़ -2) अर्थ : अपने रब का नाम ले कर पढ़ जिसने (सब चीज़ों को) पैदा किया। **आखरी आयत - وَاتَّقُوۡا یَوۡمًا تُرۡجَعُوۡنَ فِیۡہِ اِلَی اللّٰہِ** (अल बक़रः - 282) अर्थ: उस दिन से डरो जिसमें तुम्हें अल्लाह की तरफ लौटाया जायगा। आखरी आयत के बारे में विभिन्न प्रकार की रिवायात हैं, एक मशहूर रिवायत में यह आयत बयान हुई है।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad